षि कहानियाँ

पुष्क

धि बाल कहानिय

– पुष्कर द्विवेद

प्रकाशन,

प्रकाशक :

भारत प्रकाशन
17 अशोक मार्ग
लखनऊ-226001

ISBN : 81-7678-87-X

संस्करण : प्रथम
वर्ष : 2002
मूल्य : रु. 150.00

लेज़र कम्पोजिंग : श्याम कम्प्यूटर एकेडमी
राजेन्द्र नगर, लखनऊ

मुद्रक : शिवा आर्ट प्रेस
शाहदरा, दिल्ली

PRATINIDHI BAL KAHANIYAN

by ***Pushkar Dwivedi***

कहानी-क्रम

नन्हा रफूगार

क परिचित ड्राइक्लीनर की दुकान पर जाकर बैठने लगा थ
न पर एक नन्हें कलाकार को भी देखा करता। वह था- "
केए वह अपने काम में जुटा रहता। कटी-फटी पेन्ट, कमीज
रहता, बड़ी सफाई से।
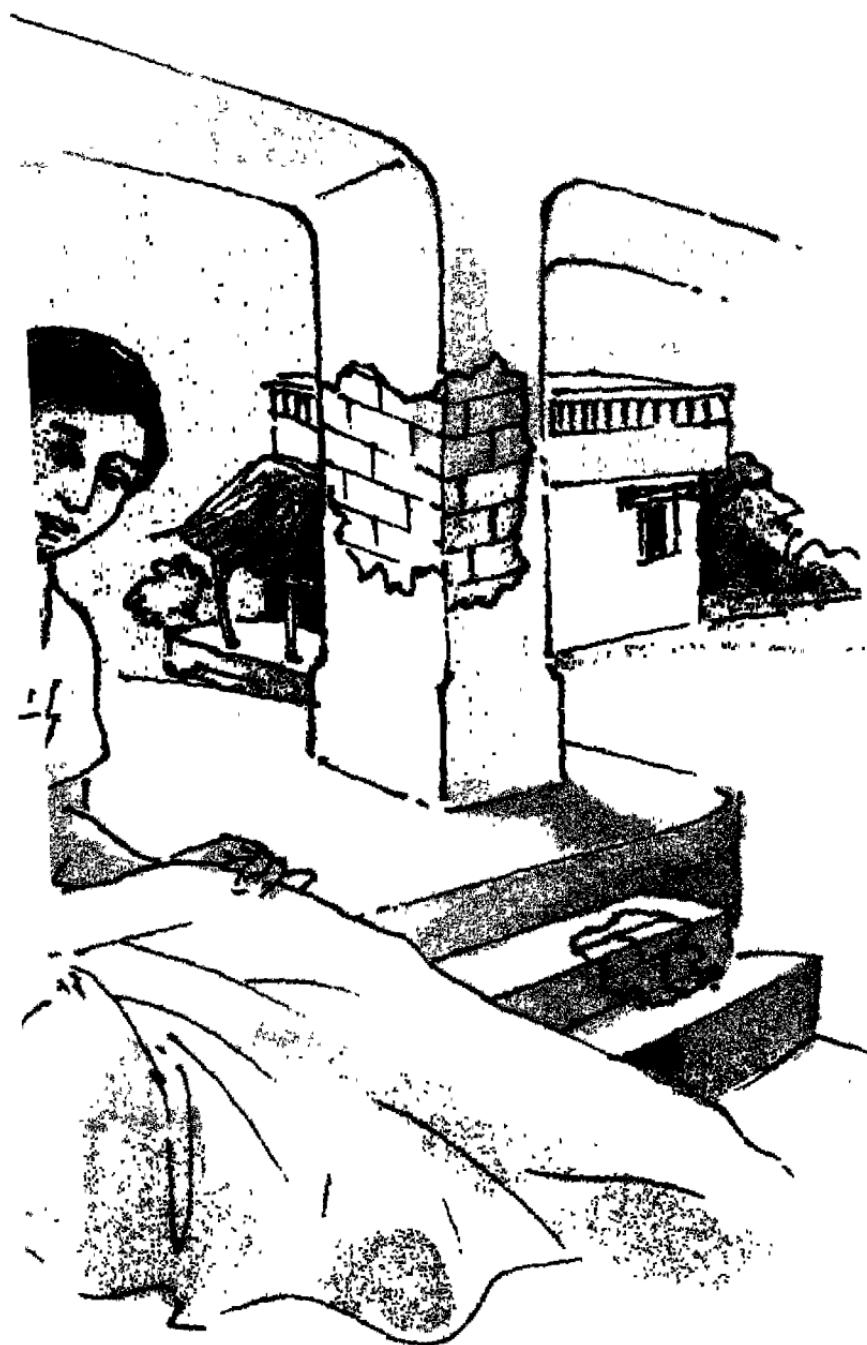
उस नन्हे-रफूगर की उम्र यही कोई 13 या 14 साल से अधिक न होगी सॉवला छरहरा बदन, चेहरे पर चेचक के दागो मे भी वह बरबस किसी को भी अपनी मासूमियत भरी कारीगरी से अपनी ओर खींच सकता था। मुझे भी उसने खींच लिया। कई बार इच्छा हुई कि उससे उसके बारे में कुछ पूछूँ— इस उम्र में ऐसा काम ? अभी तो खेलने और पढ़ने के दिन हैं। पर किसी-न-किसी कारणवश हर बार रह जाता। जब-तब उसका ख्याल मुझे बेचैन करने लगा। न जाने क्यों ? जब भी उसे देखता, तो सोच में पड़ जाता, अवश्य ही कोई मजबूरी इस कमसिन-कारीगर पर जुल्म ढा रही है। क्या इसका कोई नहीं है ? माता-पिता नही अथवा हैं, तो क्या बहुत निर्धन हैं ? अभावों में जी रहे हैं ? तरह-तरह से परेशान होने लगा था। एक दिन मैं उसकी दुकान पर गया। वह एक पैन्ट को रफू कर रहा था। दुकान पर मेरा मित्र सुशील नहीं था।

मैंने उस नन्हें से पूछा— "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"यूसुफ।" उसने मुस्कराकर बताया, फिर रफू करने लगा।

"बहुत अच्छा रफू करते हो।" मैं उसके निकट कुर्सी घसीटता हुआ उसकी प्रशंसा कर उठा। लेकिन जवाब में वह बस होठों में हँसकर ही रह गया।

"यह काम कब से कर रहे हो?" मैंने उसे फिर पूछा।

"एक साल से।"

"इससे पहले?"

"आप तो ऐसे जाँच-पड़ताल कर रहे हैं, जैसे कोतवाली का दीवान-दरोगा करता है। इससे पहले मैं हलवाई की दुकान पर बताशे बनाया करता था। और इससे पहले बढ़ई की दुकान पर काम करता था। ....और इससे पहले अपने भाई-बहनों को खेलाया करता था। साथ ही पढ़ा करता था। ....और उससे पहले इतना छोटा था कि कुछ याद नहीं।"

एक साँस में ही वह कह गया। चुप होकर फिर रफू करने लग गया।

"ओह! आपने तो इस नन्हीं उम्र में ही जिन्दगी के कई पहलुओं को उलट-पुलट कर 'सी' रखा है।" काफी गम्भीरता से मैं अनायास ही कह उठा।

"कितनी उम्र है ?" मैंने फिर पूछा।

"13 साल। और नौ वर्ष की उम्र से काम कर रहा हूँ।"

"और, आप क्या करते हैं ? क्यों इतनी बातें पूछ रहे हैं ?"

"मुझे नहीं जानते ?" मैंने आश्चर्य और मुस्कान से कहा।

"जानते क्यों नहीं ? यहाँ रोज आते हैं। पर...."

मैंने आश्वासन देकर पूछा, "अच्छा, यह तो बताओ कि तुम अभी से ही जिन्दगी और कमाने के चक्कर में कैसे पड़ गए? क्या तुम्हारा कोई नहीं? अभी तो तुम्हारी उम्र खेलने और खाने की है। तुम्हारी उम्र के बच्चे तो पाठशाला और स्कूलों में जाते हैं।"

वह निराशा और उदासी के स्वर में बोला— "महाशय, बहुत मन करता है कि पढ़ूँ। अच्छा आदमी बनूँ। औरों की भाँति समय पर खेलूँ, खाऊँ और...।" पर तभी उसकी आँखों मे एक अजीब-सा दुख तैर गया।

उस कच्ची उम्र के कारीगर ने जब जिंदगी और किस्मत की पक्की बातें कीं तो अनायास ही हृदय में उसके प्रति अजीब ही सहानुभूति और प्रेम का भाव जाग गया।

"पिता नहीं हैं। तीन भाई-बहन हैं-छोटे। माँ थोड़ा-बहुत मुहल्ले में काम कर लाती हैं। उसी ने सीना-पिरोना मुझे सिखाया। खुद भी काम करती हैं। घर का खर्च बड़ी मुश्किल से चलता है।"

यूसुफ एक क्षण रुककर फिर कहने लगा— "आगे बढ़ने की बड़ी लगन है। समय मिलता है तो पढ़ता हूँ। सोचता हूँ कि घर पर छोटी-सी दुकान खोल लूँ। वहीं खाली समय मे पुराने-फटे कपड़ों के साथ-साथ अपनी जिंदगी के हिस्सों को भी सीता रहूँ। स्कूल भी जाऊँ।"

"अवश्य-अवश्य।" मैंने उसके अरमानों और अच्छे विचारों को बढ़ावा देकर कहा— "हर महान् कठिनाइयों से ही जन्मा है। तुम अवश्य ही एक दिन बड़े आदमी बनोगे।"

"दुकान के लिए थोड़ी पूँजी चाहिए। मैं किसी का एहसान नहीं लेना चाहता। स्वयं मेहनत करके थोड़ा-थोड़ा बचा लेता हूँ। उसी से अपनी दुकान चलाऊँगा। तभी आगे कुछ कर

सकूँगा

"कितना कमा लेते हो?"

वह बोला- "काम के ऊपर है।"

"आठ-दस रुपए तो हो ही जाते हैं।"

"एक रफू पर किस हिसाब से लेते हो ?"

उसने लगभग एक इंच रफू दिखाते हुए बताया— "इतने का बीस-आना चार्ज हुआ। इसमें से चवन्नी दुकान मालिक का कमीशन, शेष रहा रुपया, वह हमारा।"

"समझा! तब तो अच्छा है।" कुछ सन्तुष्टि के से भाव में मैंने एक साँस भरकर सड़क की तरफ देखा, तो सुशील साइकिल से उतर रहा था।

☆

मेहनती मुर्गी

मुर्गी रहती थी, वह बहुत परिश्रमी और उद्यमी थी। उसी
स रहा करते थे। मगर मुर्गी की भाँति वे दोनों परिश्रमी अ
पेरू और हंस दिन भर मस्ती मारते और अपनी-अपनी

कहीं से एक गेहूँ का गट्ठा लाकर खेत में रखा। मुर्गी बड़
आ गये।

'यदि इस गेहॅू को अलग करवाकर साफ करवाने मे मेरी थोडी सहायता करो तो बढिया भोजन मिल सकता है '' मुर्गी ने उन दोनो से कहा

''मैं अपने मोटापे के कारण सफाई का काम नहीं कर सकता।'' हंस ने शिष्टता से मना कर दिया।

''मैं किसान तो हूँ नहीं जो गेहूँ साफ करना जानूँ।'' पेरू ने भी आँखें मटकाकर काम करने से साफ मना कर दिया।

मुर्गी चुपचाप अकेले ही गेहूँ साफ करने में लग गई।

पेरू और हंस मन ही मन मुस्कराकर कहते रहे कि भला कैसी पट्टी मुर्गी को पढ़ा दी।

गेहूँ साफ हो गये तो पेरू और हंस मुर्गी के पास आकर बोले, ''अब तो गेहूँ साफ हो गये हैं, इस गेहूँ से कौन सी चीज बढ़िया बनाओगी जो बहुत स्वादिष्ट होगी।''

''अभी तो इसका आटा बनाना है। इस गेहूँ का आटा पिसवाने में मदद करो।'' मुर्गी बोली।

''यह तो बड़ा आसान है'', ''आटा तो हंस को पीसना चाहिए।'' पेरू ने टालते हुए कहा।

मगर हंस ने भी बहाना बना दिया, ''मेरे पेट में दर्द होने लगा है।''

मुर्गी चुपचाप आटा पिसा लाई।

''अब तुम इस आटा का क्या बनाओगी मुर्गी रानी?'' हंस ने अपनी वाणी में मिश्री घोलते हुए पूछा।

''हाँ, मैं मीठे पुए बनाना चाह रही हूँ। परन्तु....।''

''परन्तु क्या? पेरू ने ललचाकर पूछा। ''परन्तु बनायेगा कौन ?'' पूछते हुए मुर्गी उन दोनों के चेहरों की ओर देखने लगी।

''मैं बनवा देती, परन्तु बनाऊँगी नहीं। यह काम हंस को करना चाहिए। यह कुछ काम नहीं करता।'' पेरू ने हंस की ओर देखकर कहा। मुर्गी ने किसी से कुछ नहीं कहा और

बढिया-बढिया मीठे मीठे पुए और पूडियॉ स्वय बना डाली

मीठे-मीठे पुए और खस्ता पूड़ियाँ देखकर पेरू और हंस तुरन्त मुर्गी के आस-पास चक्कर लगाने लगे।

"अरे वाह! कितना बढ़िया भोजन बनाया है मुर्गी रानी ने।" पेरू और हंस एक साथ बोले— "हम सब मिलकर खायेंगे।"

"तुम सब नहीं, सिर्फ मैं खाऊँगी।" मुर्गी बोली।

"क्यों भला हम लोगों को क्यों नहीं ? हम तो तुम्हारे मित्र हैं।" पेरू और हंस बोले।

"पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो।" मुर्गी ने कहा।

"पूछो-पूछो।" दोनों ललचाकर एक साथ बोले।

"गेहूँ कौन लाया?"

"मुर्गी रानी तुम।"

"साफ किसने किए गेहूँ?"

"तुमने।"

"आटा किसने पीसा?"

"तुमने।"

"भोजन किसने बनाया?"

"तुमने।"

"सभी कुछ परिश्रम किसने किया?" मुर्गी ने अपनी आँखें उठाकर पूछा।

"परिश्रम तो सारा कुछ तुम्हीं ने किया है मुर्गी रानी।" दोनों ने आँखें झुकाकर जवाब दिया।

"फिर परिश्रम का फल किसे मिलेगा?"

तुमको ही ’

तब फिर तुम दोनो कामचोर और महाआलसी लोग यहाँ मेरे पास क्यो खड़े हो? परिश्रम मैंने किया है इसलिए फल मैं ही पाऊँगी। ये मीठे-मीठे पुए और पूड़ियाँ मैं अपने परिवार और बच्चों के साथ खाऊँगी।’’

पेरू और हंस मुँह लटकाकर चले गये और भविष्य में कठोर परिश्रम करने का मन ही मन संकल्प लेने लगे, ताकि मुर्गी जैसी परिश्रमी एवं ईमानदार मित्र की मित्रता से भी वंचित न होना पड़ जाये। वे दोनों यह भी मान रहे थे कि मुर्गी द्वारा परिश्रम से तैयार भोजन पर वास्तव में मुर्गी का ही अधिकार था।

शिवम् सुधर गया

क शैतान लड़के शिवम् की कहानी सुनाती हूँ कि कैसे मैंने :

ाथ कक्षा चार में पढ़ता है। वह मुझसे एक सीट पीछे बैट
लेयाँ क्षिप्रा और आकाँक्षा बैठती हैं। शिवम् के साथ उनके
: हैं।

सरस और कमल वैसे तो सीधे लडके है लेकिन वे शिवम् के साथ शैतान बन जाते शिवम् कभी पीछे से पेन्सिल मेरी पीठ मे चुभोता, कभी पीछे और नीचे से पैर मारता। ऐसा वह क्षिप्रा और आकाँक्षा के साथ भी करता।

एक दिन मैंने शिवम् को मना किया तो उसने मेरी पीठ पर स्केल मार दी। क्षिप्रा ने जब मेरा पक्ष लिया तो उसने क्षिप्रा के चिकोटी भर ली। शिवम् के साथी सरस और कमल हँसने लगे। हम तीनों को रोना आ गया।

तभी मैंने अपनी टीचर से शिकायत की। टीचर ने उसे सीट पर खड़ा कर दिया। उसने खिसियाकर तब मुझे इन्टरवल में और भी परेशान किया। उसने मेरा लंच बाक्स छीनकर फेंक दिया। उस दिन मैं भूखी रह गई। मेरी सहेलियों ने मुझे जबरन थोड़ा-थोड़ा खाना खिलाया। उस दिन मैं बहुत रोई।

घर आकर मैंने पापा को बताया। पापा को अपने काम से फुर्सत नहीं मिलती। उन्होंने फिर भी कहा- "मैं तुम्हारे प्रिंसिपल को पत्र लिख देता हूँ। तुम उन्हें यह पत्र दे देना। वे शिवम् को समझा देंगे।"

मैंने ऐसा ही किया। प्रिंसिपल ने शिवम् को बुलाकर डाँटा और कान पकड़वाये। दो चार दिन तो शिवम् ठीक रहा लेकिन वह फिर पुराने ढर्रे पर आ गया।

"तुम बहादुर लड़की बनो। तुम क्यों उससे मार खा जाती हो?" पापा ने एक दिन कहा।

"वह लड़का है.....।"

"तो क्या हुआ?- तुम भी तो लड़की हो। जानती हो रानी लक्ष्मीबाई भी लड़की थी, जो बचपन से बड़े-बड़े लड़कों और अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने के लिए प्रसिद्ध है। दुर्गावती, कर्मावती जैसी अनेक लड़कियाँ ही थीं, जिनके आगे बड़े-बड़े पुरुष योद्धा हार जाते थे।" पापा ने मुझे समझाते हुए बहादुर बनने की प्रेरणा दी और कहा, "साध्वी, हर संकट से बच निकलने तथा उसके समाधान का रास्ता सर्वप्रथम स्वयं निकालो। फिर दूसरों की सहायता लो।"

मेरे बालमन पर पापा की बातों का गहरा प्रभाव पड़ा। मैंने फिर शिवम् को सही रास्ते पर लाने के लिए स्वयं को दृढ़ किया।

दूसरे दिन मैंने अपनी दोनो सहेलियो से सलाह करके एक रहने का फैसला लिया यदि कोई लड़का या शिवम् फिर परेशान करेगा तो हम तीनों उससे मुकाबला करेंगे। फिर ऐसा ही हुआ-

हिन्दी की टीचर जैसे ही पढ़ाकर कमरे से बाहर गईं कि शिवम् ने मुझसे मेरी रबड़ माँगी। मैंने कहा- "तुम्हारे पास है तो।"

"देती हो या नहीं?" वह आँखें दिखाकर बोला।

"नहीं।"

उसने आगे आकर मेरी हिन्दी की किताब का कवर फाड़ दिया।

अपनी पुस्तक को फटा देखकर मैंने उसे धक्का दिया। वह गिर पड़ा। तभी मैंने अपनी सहेलियों से कहा- "क्षिप्रा-आकाँक्षा ! इसे पकड़कर प्रिंसिपल के पास ले चलो।"

तुरन्त ही हम तीनों ने उसे पकड़ लिया। वह इस संगठित प्रतिरोध के लिए तैयार नहीं था, उसे आशा भी नहीं रही होगी कि हम तीनों सहेलियाँ इस प्रकार उसे पकड़ लेंगी।

प्रिंसिपल ने हम तीनों के साहस व सूझबूझ को सराहा और शिवम् को डाँटते हुए अपने कमरे में खड़ा रखा। उन्होंने तुरन्त फोन करके शिवम् के पापा को बुलवाया। उसकी शिकायत की। उसके पापा ने शिवम् को खूब डाँटा और कहा, "चलो, तीनों बहनों के पैर छुओ।"

उसने हम तीनों के पैर छूकर क्षमा माँगी। तभी शिवम् के पापा ने हम तीनों को टाफियाँ देकर कहा- "अगर शिवम् फिर परेशान और शैतानी करे तो बताना। मैं इससे पूरे स्कूल के बच्चों के सामने तुम्हारे पैर छुआऊँगा तथा डाँट लगाकर कान भी खींचूँगा।'

हम तीनों सहेलियों ने शिवम् के पापा को धन्यवाद दिया, अब शिवम् सुधर गया है। वह किसी को भी परेशान नहीं करता है।

इस घटना से अब सारे शैतान लड़के मुझसे व मेरी सहेलियों से डरते हुए मित्रता रखते हैं। मुझे मेरी क्लास का मॉनीटर बना दिया गया है।

☆

सच्चा दोस्त

मात्र दस वर्ष का है। वह कक्षा छह का छात्र है अभी, लेकि
है। वह स्कूल से लौटकर शाम के समय और खेलने के प
हर रोज निकालता है। इसके बाद ही वह मोहल्ले के पार्क
ा है। रवि के पापा रोजाना अखबार मँगाते हैं। हर महीने कुछ

इस समय शाम के चार बजे है रवि स्कूल से लौट आया है वह तीन बजे लौटकर आता है। खाना-खा-पीकर वह हमेशा की भाँति अखबार पढ़ने के लिए बैठा है।

रवि का एक मित्र है- मोहन। मोहन बहुत अच्छा खिलाड़ी है। अभी से वह बैडमिन्टन की अच्छी प्रेक्टिस करने लगा है, ताकि वह बड़ा होकर अच्छा खिलाड़ी बन सके। वह जब खेलने जाता है, तो अपने साथ रवि को भी ले जाता है। इस समय भी वह आ गया है। आज वह हर रोज से पहले आ गया है। "रवि चलो चलते हैं खेलने", मोहन ने रवि के घर के अन्दर दाखिल होकर कहा है।

"हाँ, अभी पन्द्रह मिनट में चलते हैं। थोड़ा-सा रह गया है- यह समाचार पढ़ लूँ।" रवि उसे बैठने को कहकर अखबार को तेजी से पढ़ने लगता है।

"रवि, तुम पहले तो अखबार नहीं पढ़ते थे। अभी मैं पिछले दो महीने से देख रहा हूँ कि तुम्हारी रुचि अखबार में दिनोंदिन बढ़ रही है।" मोहन कहता है।

"हाँ मोहन, मुझे अब अखबार पढ़ना अच्छा लगता है। अखबार से बहुत सी ताजी जानकारी मिलती है। बाह्य-जगत से नाता जुड़ता है।" रवि फिर आगे कहता है, "अखबार का आज हमारे सबके बीच बड़ा महत्त्व है। यह हमें नित नई जानकारियाँ तो देता ही है अपितु मनोरंजन के साथ-साथ समस्याओं को दूर कराने में सच्चा साथी सिद्ध है।"

"अच्छा!"

"हाँ।"

"मुझे तो अखबार का महत्त्व और समस्याओं के निवारण में इसकी भूमिका का आभास तब हुआ, जब उस दिन पापा ने मुझे दुबे अंकल के पास 'माइक्रोबेव का समाचार' देकर भेजा था।" रवि बताता है।

"माइक्रोबेव का समाचार?"

"हाँ, वह जो तुम दूर सामने रेलवे स्टेशन के पार माइक्रोबेव देख रहे हो न।" रवि मोहन को सामने ऊँचा खड़ा माइक्रोबेव स्टैण्ड दिखाते हुए कहता है।

"हाँ-हाँ, क्या हुआ था उसे?" मोहन उत्सुकता से पूछता है।

"उस रोज पापा ने देखा कि शाम गहरी हो चुकी थी। मगर माइक्रोबेव के सिरे का लाल

बल्व नही जल रहा था तब पापा ने बताया कि ऐसे मे यदि कोई हवाई जहाज नीची उडान करता गुजरेगा, तो इस माइक्रोबेव से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो जायेगा ''

"फिर ?" मोहन पूछता है।

"फिर पापा ने माइक्रोबेव पर लाल बत्ती नहीं जलने और सम्भावित खतरे का जिक्र करते हुए एक समाचार बनाया। उस समाचार को पापा ने मुझे देते हुए कहा कि मैं दैनिक समाचार........के कार्यालय में जाकर दुबे अंकल, जो वहाँ सम्पादक और पापा के मित्र हैं, को दे आऊँ।" रवि बताते हुए आगे कहता है—

"दूसरे दिन समाचार छपते ही शाम को हम लोगों ने देखा कि-माइक्रोबेव पर लाल बत्ती जल रही थी।" रवि आगे फिर बताने लगता है- "इतना ही नहीं, उस दिन जब माइक्रोबेव का समाचार छपा और मैं उसे पढ़ रहा था, तो अखबार में सुरेश अंकल के एक्सीडेन्ट का समाचार भी छपा था। ये सुरेश अंकल पापा के गाँव खानदान के हैं और शहर में दूसरे छोर पर रहते हैं। यह समाचार पढ़कर हम लोग पापा के साथ सुरेश अंकल को देखने गये, वरना हमें पता जब चलता तब चलता।"

रवि आगे कहता-बताता है—

"बस, उसी दिन से मुझे अखबार का महत्त्व और उसमें प्रकाशित बातों की गहराई समझ में आ गई। मैंने तब से हर रोज अखबार पढ़ना और आस-पास की घटनाओं पर नजर रखने का फैसला कर लिया क्योंकि हम अखबार पढ़ते हुए अपनों से दूर लोगों के पास होते हैं। अखबार वास्तव में हमारा सच्चा दोस्त और ऐसा दोस्त है, जो कभी धोखा न देकर सदैव ज्ञान वृद्धि करने के लिए तत्पर रहता है।

"तुम ठीक कहते हो रवि। अब मैं भी इससे दोस्ती करूँगा और हर रोज तुम्हारी तरह अखबार पढ़ा करूँगा। उसी के बाद खेलने के लिए बाहर आया करूँगा।" मोहन अपने मित्र रवि से कहता है।

इस वार्ता एवं संकल्प के पश्चात् रवि और मोहन दोनों मित्र बाहर पार्क में खेलने के लिए चल पड़ते हैं।

☆

चतुरसेन की पढ़ाई

ा। उसका नाम चतुरसेन था। वह अब आठ-दस वर्ष का हो रह
स्कूल नहीं जा पाता। वह दुःखी होकर इधर-उधर खड़ा रहता
के लड़कों को स्कूल जाता देख बहुत ललचाता।

पेता मज़दूरी करके पेट भरने लायक ही कमा पाते थे। अत
रमर्थ थे।

एक दिन चतुरसेन गाँव के एक महाजन की दुकान के आगे खडा था वहाँ गाँव के कुछ गप्पी किसान बीड़ी पीते हुए अपनी-अपनी डीगे हाँक रहे थे मै यह कर सकता हूँ.....मैं वह कर सकता हूँ।

तभी उधर से गाँव का एक धनवान सुनार गुजरा। वह प्रतिष्ठित और सम्पन्न व्यक्ति था। मैं इस धनवान के साथ भोजन कर सकता हूँ।'' चतुरसेन ने उन गप्पी किसानों को सुनाते हुए खुद से कहा— ''आज दोपहर ही मैं इस सुनार के घर इसके साथ भोजन करूँगा।''

''तुम और उस सुनार के साथ भोजन करोगे?'' एक गप्पी किसान ने चतुरसेन का मजाक उड़ाते हुए कहा।

''हाँ-हाँ, मैं भोजन करूँगा, उसके साथ।''

''वह तुम्हें अपने पास फटकने भी नहीं देगा।'' एक अन्य किसान ने कहा।

''हाँ, ठीक ही तो है।'' वह महाजन भी बीच में बोला।

''तो लगी शर्त।'' चतुरसेन ने पासा फेंका।

''अगर तुम उस सुनार के यहाँ खाना खाकर आये तो दो सौ मुद्राएँ मैं नकद दूँगा और उसके बाद तुझे अपने यहाँ नौकरी भी, यदि तुम चाहोगे, अन्यथा तुम्हें मेरे यहाँ एक वर्ष मुफ्त में काम करना होगा।'' महाजन ने शर्त बतायी।

''मंजूर है।'' चतुरसेन ने कहा।

उसी समय चतुरसेन उस सुनार के घर पर पहुँचा और धीरे से बोला— ''काका, मेरी टोपी के बराबर स्वर्णपिण्ड का मूल्य क्या होगा?''

''क्या ?'' सुनार ने लालच में भरकर उसे अन्दर आने को कहा और नौकर को बढ़िया भोजन लाने का आदेश दिया। सुनार ने चतुरसेन के साथ भोजन किया। मीठी मधुर बातें कीं और भोजनोपरान्त पूछा—

''कहाँ है वह स्वर्णपिण्ड ? लाओ, पहले दिखाओ तो। मैं तुझको उसके बदले में एक हजार मुद्राएँ और बढ़िया से कपड़े अलग से इनाम में दूँगा।''

''परन्तु मेरे पास स्वर्ण कहाँ ? मैंने तो यूं ही पूछा था, जानकारी के लिये।''

"बेवकूफ।" सुनार चीखा— "भागो यहाँ से।"

"मैं बेवकूफ नहीं, मैंने अभी आपके साथ खाना खाया, जिसके लिये महाजन मुझे दो
ौ रुपये देगा और पक्की नौकरी भी। मैं फिर स्कूल जा सकूँगा ताकि और ज्यादा बुद्धिमान
न सकूँ।"

सुनार सचमुच उसकी चतुराई पर प्रसन्न हुआ। उसने चतुरसेन की पढ़ाई का प्रबन्ध
पनी ओर से कराया। महाजन ने भी चतुरसेन को इनाम दिया और आगे पढ़ने में पूरी मदद
ो।

अब चतुरसेन प्रसन्न था।

☆

मोर की बेटी

गरीब लकड़हारा था। वह जंगल में से सूखे वृक्षों की टह
उन्हें बेचकर परिवार सहित अपना पेट पालता।

लकड़हारे के साथ उसकी पत्नी भी जंगल में जाती थी। व
के सिर पर रखवाने में मदद करती। लकड़हारे की पत्नी क
। जिन्हें वह जंगल में किसी छायादार वृक्ष के नीचे सुला दे
ड़ायक हो जाती।

एक दिन जगल मे जब लकडहारा लकडी काटकर गट्ठर बॉध चुका तभी अँधेरा छा गया और जोर से आँधी आई, इस आँधी में उसका एक बच्चा उड़कर कहीं दूर जा गिरा।

शाम का समय और उस पर काली आँधी। बच्चा वहाँ नहीं मिला जहाँ वह सो रहा था तो लकड़हारा और उसकी पत्नी दैवीय विपत्ति अपने ऊपर मानकर रोते-कलपते घर चले गए।

जंगल में जब आँधी थमी तो पशु पक्षी चहचहा कर इधर-उधर उड़ने घूमने लगे। एक मोर ने देखा कि कोई बच्चा पड़ा रो रहा है। वह मोर उसके पास गया और उसे अपनी चोच में दबाकर अपने स्थान पर ले गया।

मोर की मोरनी मर चुकी थी। मोर के भी दो छोटे-छोटे बच्चे थे। लकड़हारे का बच्चा उन मोर के बच्चों को देखकर चुप हो गया।

मोर उड़कर गया और कुछ फल ले आया। इस प्रकार मोर अपने बच्चों के साथ उस लकड़हारे के बच्चे को भी पालने लगा। वास्तव में वह बच्चा एक सुन्दर लड़की थी। लड़की मोर के बच्चों में खेलती-कूदती बड़ी हो रही थी।

लड़की अब एक सुन्दर युवती हो चुकी थी। एक दिन वह अपने मोर भाई-बहनों के साथ जंगल में खेल रही थी, तभी उस देश का राजकुमार जो जंगल में शिकार खेलकर जा रहा था, उसने इस सुन्दरी को देखा।

"तुम कौन हो?" राजकुमार ने पास आकर पूछा।

"मैं मोर की बेटी हूँ।"

"मोर की बेटी ?"

"हाँ पर तुम कौन हो और क्या चाहते हो?"

"मैं इस देश का युवराज हूँ और तुमसे शादी करना चाहूँगा।"

फिर मोर की सहमति से राजकुमार उस 'मोर की बेटी' को ब्याह कर ले गया।

सारे राज्य में शोर हो गया कि एक सुन्दर कन्या से राजकुमार ने शादी की है जो मोर की बेटी है।

महल मे रानियो के काम काज को करके लकडहारे की पत्नी अपना पेट पालने लगी थी लकड़हारे ने उसी दिन से जगल मे जाना छोड़ दिया था.

एक दिन वह मोर की बेटी जब अपने कमरे में कपड़े बदल रही थी तो लकड़हारिन वही उसकी सेवा में थी।

उसने मोर की बेटी की बाँह में गुदना देखा। गुदना में उसका नाम लिखा था— रूपा।

'रूपा' लकड़हारिन को अपनी बेटी याद आ गई। उसने डरते-डरते पूछा— "तुम्हारा नाम रूपा है बेटी।"

"मैं तो मोर की बेटी हूँ।" उसने बताया।

तभी लकड़हारिन ने मोर की बेटी को ध्यान से देखा तो वह उसकी दूसरी बेटी से एकदम मिल रही थी। लकड़हारिन ने दुखते दिल से उसे अपनी बेटी के बिछुड़ने की कहानी सुनाई और बताया कि दोनों बहनों की बाँहों पर उनके नामों का गुदना था। उसकी खोई हुई बेटी की बाँह पर रूपा गुदा था जैसे कि तुम्हारे।

"हो सकता है कि...।" मोर की बेटी बड़बड़ाई।

"मैं तुम्हारी माँ हूँ बेटी, मुझे विश्वास है क्योंकि मेरी दूसरी बेटी की शक्ल तुमसे एकदम मिलती है।"

"हो सकता है माँ पर।" वह भावुक हो उठी।

दूसरे दिन लकड़हारिन अपनी दूसरी बेटी को महल में रानी बनी पहली बेटी के पास लेकर गई।

"यह तो एकदम मेरी हमशक्ल है।" मोर की बेटी बोली।

तभी मोर की बेटी ने अपनी राजसी वस्त्र अपनी दूसरी बड़ी बहन को पहना दिए और उसके मैले वस्त्र स्वयं पहन लिए।

इसी बीच राजकुमार आ गया।

राजकुमार मोर की बेटी की दूसरी बहन को नही पहचान पाया वह असली नकली का
नहीं कर सका तो मोर की बेटी को विश्वास हो गया कि वह मोर की बेटी नहीं बल्कि वह
ड़हारिन की बेटी है।

यह रहस्य जब राजकुमार को पता चला तो उसने कोई बुरा नहीं माना।

"तुम कोई भी हो, मेरे लिए तो वही मोर की बेटी और मेरी रानी ही हो।" राजकुमार ने
।

सचमुच रूपा 'मोर की बेटी' के रूप में ही जानी जाती रही। लेकिन लकड़हारिन माँ तथा
और दूसरी बहन को पाकर मोर की बेटी को दुनिया की सारी खुशियाँ मिल गईं।

☆

संगति का प्रभाव

ार, पांचाल देश का एक राजा शिकार करता हुआ, प
पीछा करते करते राजा थक गया था, इसलिए वह एक झर
शकर लेट गया। राजा ने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

कुछ ही दूरी पर निकटवर्ती गॉंव का एक आदमी बैठा हुआ था, वह भी घने वृक्षो की छाँव में सुस्ता रहा था। इसी समय उस आदमी के ऊपर वृक्ष से एक तोते की आवाज आई... "चुप क्या देखते हो ? मालदार आदमी है। इसके आभूषण मुकुट, हार आदि छीन लो, इसे मारकर लाश इसी झरने में डाल देना।"

वह आदमी घबराकर बोला... "चुप बे ! यह राजा है इस देश का"। वह आदमी अपने राजा को पहचानता था।

"मूर्ख है, हाथ आया आसामी छोड़ रहा है। चूको मत, जाने न पाये।" वह तोता फिर बोला।

राजा सोया नहीं था। वह तोते को आदमी की आवाज में बोलता देखकर मन में डरा कि कहीं मायावी पर्वत पर तो नहीं आ गया। वह उठा और संशकित हुआ वहाँ से चल दिया।

तोता राजा को जाता देखकर चिल्लाया– "दौड़ो, पकड़ो ! जाने न पाये, धनुष-बाण फेंको, इसका पीछा करो।"

राजा तेजी से निकल गया। तोता चिल्लाता पीछे रह गया। राजा को आगे एक आश्रम दिखा। राजा ने आश्रम देखकर अपना घोड़ा रोका। वह आश्रम में जैसे ही अन्दर प्रविष्ट हुआ कि फिर मानव बोली में एक तोता स्वागत करता हुआ बोला।

"स्वागत है श्रीमान्, पधारिये। इस ऋषि आश्रम में आपका अति अभिनन्दन है। हमें प्रसन्नता है, वहाँ सामने घड़े में शुद्ध जल और उस थाली में कुछ फल हैं, आप प्रेम पूर्वक जलपान ग्रहण करें। अभी मुनिवर आते ही होंगे। आप तब तक थकान मिटायें... वहाँ आसन पर विराजमान हों।"

राजा तोते की मीठी वाणी सुनकर दंग रह गया। राजा कहने लगा कि उस जंगली तोते और इस आश्रम के तोते में कितना अन्तर है। वह 'पकड़ो जाने न पाये, सब कुछ छीन लो, मार डालो" की रट लगाये था और यह......... राजा बड़बड़ाकर उस मृदुभाषी तोते को देखने लगा।

ी तोता बोला "महाराज यह सब सगति का प्रभाव है आप जिस जगली तोते की रहे है, वह मेरा सगा और जुड़वाँ भाई है. एक बार आँधी आई और बचपन मे हम छुड़ गये। दुर्भाग्य से वह नीच और चोर लुटेरों की कुसंगति में पड़ गया और सौभाग्य षि मुनियों की सुसंगति में।"

जा को तोते का स्पष्टीकरण् उचित लगा। अच्छे लोगों के साथ अच्छी बातें और बुरों बुरी बातें ही सीखने को मिलती हैं। राजा फिर कुछ देर वहाँ विश्राम करके अपनी चला गया।

☆

चतुर बालिका

ीब किसान था। दो बीघा ज़मीन में भी कभी-कभी कुछ न हो
ग व अपने परिवार का पेट भरता।

उसकी पत्नी, एक लड़का जिसकी नयी-नयी शादी हुई थ
कुल पाँच लोग थे। सीताराम का बेटा भी मेहनती था।

ाँव के महाजन से कर्जा लेते-लेते तीन सौ रुपये से ज्यादा

ैसा माँगने अक्सर सीताराम के घर आता। मगर सीताराम के
ेखकर भुनभुनाता हुआ लौट जाता।

एक दिन जब शाम को महाजन सीताराम के घर अपना पैसा माँगने आया तो बाहर छ
के नीचे सीताराम की लड़की एक अँगीठी पर पतीली में खाना पका रही थी।

महाजन ने आते ही पूछा- 'बेटी तेरा बाप है घर में?' 'नहीं काका।' लड़की ने विनम्र
से उत्तर देकर चारपाई बिछा दी- 'बैठो काका।'

महाजन सीताराम की लड़की की आवाज और आदरभाव से प्रसन्न हुआ- 'तेरा भाई क
है?'

'वह स्वर्ग का पानी फेरने गया है।'

'स्वर्ग का पानी फेरने ?'

महाजन बात न समझकर पूछने लगा- 'तेरी माँ क्या कर रही है?'

'जी वह एक के दो कर रही है।'

'एक के दो?' महाजन फिर उलझ गया।

'अच्छा तू क्या कर रही है यहाँ?'

'मैं एक देखकर दूसरे का पता लगाने के लिए बाहर बैठी हूँ।' उसने मुस्कराकर कहा

महाजन सीताराम की लड़की की बातों का जब कोई अर्थ न निकाल सका तो बोला, "बेटी अपनी बातों के अर्थ तो बताओ। मेरे लिए तो सब पहेलियाँ ही हैं।"

"मैं हर एक बात का अर्थ बताने का दो सौ रुपए लूँगी काका। मंजूर हो तो बताऊँ।" सीताराम की लड़की ने शर्त बतायी।

"ठीक है। ये लो छह सौ रुपये नकद।" महाजन ने उसे रुपये देकर कहा— "अब जल्दी से अपनी बातों के अर्थ बताओ।"

"काका अर्थ बड़े सीधे हैं। मेरा भाई 'डाब' लेने गया है। डाब से छप्पर बनेगा। जब बरसात (स्वर्ग) का पानी उस पर पड़ेगा तो पानी दस हाथ दूर गिरेगा। इसलिए कहा था कि भाई स्वर्ग का पानी फेरने गया है।"

अब दूसरी बात का अर्थ ? महाजन ने पूछा।

"मेरी माँ चने से दौल (दाल) बना रही हैं। तभी कहा था कि एक के दो बना रही हैं।"

'तीसरी ?'

"मैं यह बाहर अँगीठी पर रखी पतीली में पक रहे चावल देखने बैठी हूँ। एक चावल देखूँगी तो दूसरे का पता चल जाएगा कि पक गया है या नहीं। इसलिए मैंने कहा था कि एक देखकर दो का पता लगाने बैठी हूँ।"

महाजन सीताराम की लड़की से बेहद प्रभावित हुआ। जब वह उठकर चलने लगा तो लड़की ने हँसकर तीन सौ रुपए महाजन को देते हुए कहा, "काका ये अपने उधार के पैसे लेते जाइए।"

एक पल महाजन उस बुद्धिमान लड़की को देखता रहा। फिर उस लड़की पर प्यार से हाथ फेर कर चलता बना— "मेरी ओर से अपना इनाम समझकर तुम रखो।"

दूसरे दिन महाजन ने सीताराम के घर जाकर उसकी लड़की की बुद्धि की बड़ाई की— "जिसके घर ऐसी बुद्धिमान कन्या हो वह सबसे धनवान है।" फिर महाजन ने सीताराम को गले लगाकर उसकी लड़की का हाथ अपने लड़के के लिए माँग लिया।

☆

गधा चुप क्यों ?

पुर कस्बे में दो भाई रहते थे— श्यामू और दीनू। दोनों में व
ने घर के दो भाग कर दिये और स्वयं श्यामू के साथ र

ों भाई के पिता न थे। श्यामू जरा तेज तर्रार और चोर प्रवृ
हती थी और उसी के साथ रहती थी, क्योंकि श्यामू दी
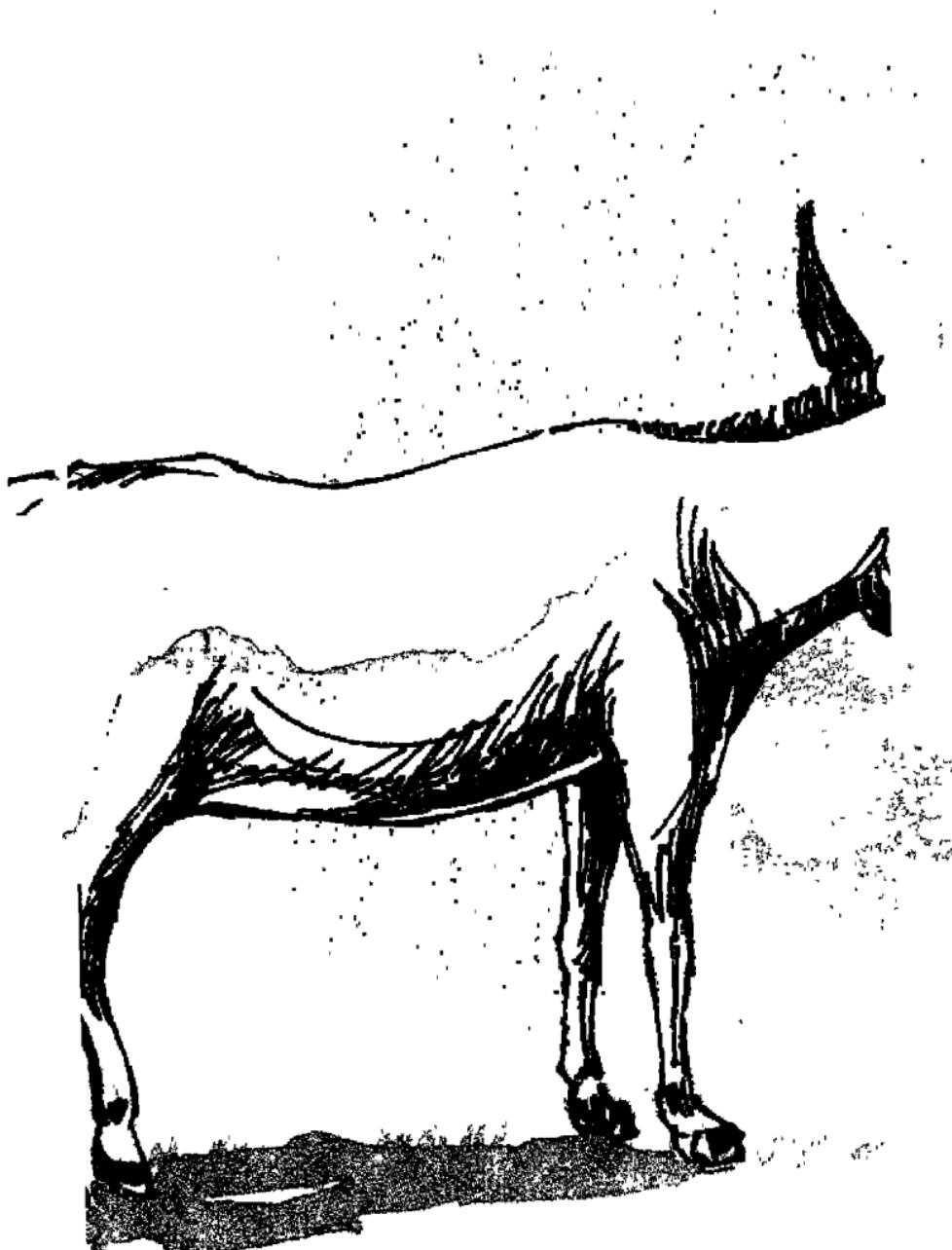
एक दिन श्यामू ने दीनू के घर से कुछ बर्तन चोरी कर लिए दीनू को पता चला तो वह पहले श्यामू के घर आया और पूछा, 'तूने मेरे बर्तन लिए हैं ?'

उस समय श्यामू अपने गधे को घास डाल रहा था। उसने दीनू से तुरन्त कहा, 'नही भाई, मैंने तुम्हारे बर्तन नहीं लिए।'

'क्यों यह सच बोल रहा है ?' दीनू ने तभी श्यामू के गधे से पूछा।

'नहीं यह झूठ बोल रहा है। बर्तन इसी श्यामू ने लिए हैं।' गधे ने जवाब दिया।

बस फिर क्या था, दीनू थानेदार के पास गया। उसने श्यामू की चोरी की शिकायत की।

श्यामू ने सारी बात अपनी माँ को बताई।

'ठीक है, तू अब जेल की चक्की पीस। तू चोर होता जा रहा है।' माँ ने नाराज होकर कहा।

'किसी तरह इस बार बचा लो माँ। मैं इस बार कसम खाता हूँ कि आइन्दा चोरी नहीं करूँगा और आगे से परिश्रम करके रोटी कमाऊँगा।' श्यामू ने अपनी माँ से कहा, 'इसे भी सच बोलने की बीमारी है। यदि यह न कहता तो मेरी चोरी पकड़ी नहीं जाती। श्यामू गधे की ओर देखता खीझा।

'ठीक है, इस बार मैं बचा लूँगी, मगर आइन्दा चोरी मत करना।' माँ ने कहा।

श्यामू को उसकी माँ की बुद्धिमत्ता और सूझ-बूझ पर पूरा विश्वास था। उसकी माँ ने तब कुछ मोटी-मोटी और कुछ छोटी-छोटी रोटियाँ रात को छत पर जाकर घर के आँगन में फेंक दीं।

नीचे श्यामू आँगन में खड़ा होकर कहने लगा, 'अरे आँगन में आज तो रोटियाँ बरसी हैं। वाह रे आकाश! और मेरे ईश्वर!

गधे ने रोटियाँ देखीं तो वह भी प्रसन्नता से भर गया। श्यामू ने रोटियाँ अपने गधे को भरपेट खिलाईं।

सुबह गधे के जागने के पूर्व श्यामू की माँ ने गधे के आस-पास चाँदी के कुछ सिक्के बिखेर दिये जब गधा जागा तो श्यामू ने पास आकर अचरज और प्रसन्नता से कहा आह! आज तो तूने चाँदी के रुपये लीद में दिये हैं। यह सब आकाश से बरसती रोटियों को खाने से हुआ है। श्यामू ने गधे पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा। गधा भी आनन्दित होकर विचकित था तभी दो सिपाही आकर श्यामू को थानेदार के पास ले गये। वहाँ उसने चोरी से साफ इन्कार कर दिया। तब दीनू ने कहा— थानेदार जी, यह झूठ बोलता है। इसके गधे को बुलाओ और उसे पूछो, वह झूठ नहीं बोलता।'

गधे को लाया गया। 'यह तो साहब गधा है। यह बे-सिर पैर की बातें करता है। इसका विश्वास मत कीजिएगा।' श्यामू ने थानेदार से कहा।

'मुझे पूछने दो।' थानेदार ने श्यामू से कड़ककर कहा और गधे से पूछा- 'क्या श्यामू ने बर्तन चोरी किये और तुमने देखा है ?'

'हाँ श्रीमान् !'

'इसने कब चोरी की ?'

'कल श्रीमान्, जब आकाश से रोटियाँ बरसी थीं।'

'रोटियाँ बरसीं थीं आकाश से ?' थानेदार चकित रह गया। 'हाँ हजूर! गधा बोला— 'वही रोटियाँ खाकर आज सबेरे मैंने लीद में चाँदी के रुपये दिये हैं।'

'लीद में चाँदी के रुपये ?' थानेदार झुँझलाकर चौंका।

'हाँ श्रीमान् ! चाहें तो श्यामू से पूछ लीजिये।' गधे ने गर्व से गर्दन उठाकर अपनी पूँछ भी हिलाई।

थानेदार ने जब श्यामू की ओर देखा तो श्यामू बोला- 'मैंने कहा था कि न श्रीमान्, यह तो बे-सिर पैर की बातें करता है। यह तो एकदम गधा है।'

'हाँ, यह तो एकदम गधा है।' थानेदार को भी विश्वास हो गया कि दीनू और गधा दोनों ही गलत बातें कर रहे हैं और फिर गधा तो सचमुच गधा है।

श्यामू छोड़ दिया गया। माँ की सूझ-बूझ से श्यामू बच गया। फिर उसने चोरी छो
र सारा किस्सा बताकर उसने अपने भाई को नये बर्तन अपनी परिश्रम की कमाई से ल
। दोनों भाइयों में पुनः प्रेम हो गया। वे एक साथ रहने लगे।

मगर गधा खामोश हो गया, कहते हैं तभी से गधा चुप और खामोश रहता है। वह वि
ारे में कोई टिप्पणी नहीं करता। उसे यह भी एहसास हो गया कि मानव बुद्धि और स
के आगे उसका सीधा-सादा सच भी झूठ हो सकता है, वह मूर्ख ठहराया जा सकता

प्रेरणा

[दरवाजे की दहलीज पर आकर बैठ गया। स्वयं से एकदम नि
कट आ रही थी। लेकिन, वह बड़ा उदास-सा हो रहा था, अप
गा था कि, वह कैसे पास होगा ? करे भी तो क्या करे ? उसे
सूरत नहीं दिखाई दे रही थी।

अपने तिमाही और छमाही की परीक्षाओं में अच्छे नम्बरों से र

से उत्तीर्ण भी न हुआ था। दोनों बार वह गणित और अंग्रेजी में फेल हुआ। दसवीं की परीक्षा 'बोर्ड' द्वारा होनी थी— वार्षिक। पर गणित व अंग्रेजी के नाम पर उसे नानी याद आ जाती।

अपने घर के बाहर दरवाजे पर बैठा-बैठा राजू सोच रहा था। उसे उसके पापा ने चेतावनी दी थी कि यदि वह वार्षिक परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण न हुआ तो घूमना-फिरना और जेब खर्च बन्द हो जायेगा। लेकिन सबसे बड़ा सोच उसे इस बात का हो रहा था, कि वह यदि वास्तव में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण न हुआ तो उसके पापा उसे गर्मी की छुट्टियों में नैनीताल और मसूरी नहीं ले जायेंगे। यह सोचकर राजू बड़ा दुःखी हो गया।

तभी उसकी निगाह नीचे ज़मीन पर जाती हुई एक चींटी पर पड़ी जो अपने वजन से अधिक वजन वाले मृत झींगुर को खींचकर दीवार पर चढ़ने लगी थी। पर बार-बार गिर जाती। स पर चींटी निरन्तर अथक परिश्रम करके झींगुर को दीवार पर खींचने में लगी रही। आखिर ह खींच कर ले ही गयी।

सहसा, राजू उस चींटी की सफलता पर प्रसन्न तो हुआ ही, साथ ही उसे एक उदाहरण ौर मिल गया था। कठोर परिश्रम और सच्ची लगन के सिवा परीक्षा में सफल होने के लिए न्य कोई रास्ता न था। पास होकर अपने पापा को भी प्रसन्न कर गर्मियों में नैनीताल और ूरी जा सकेगा। यह उसे अब अपने मन में निश्चित आभास होने लगा था। वह तेजी से उठा ेर अपने कमरे में अन्दर चला गया, जहाँ पुस्तकें उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं।

सुपात्र और सुपुत्र

ाँची नरेश देवमित्र बूढ़े हो चले थे। वे राज्य का अधिक
थी। वे राज्य बड़े पुत्र को परम्परानुसार न सौंपकर अपने सु
।

महामन्त्री बोधायन से विचार-विमर्श के बाद राजा देवमित्र ने बिना किसी उत्सव और घोषणा के अपने बड़े पुत्र सुरेश को राजगद्दी सौंप दी।

अभी राज्यगद्दी पर बैठे पाँच-छह घंटे ही हुए थे कि एक ग्रामीण ने आकर दुहाई दी— "महाराज, राजमाता ने हम गरीबों के झोंपड़े जलवा दिए। न्याय करें महाराज।"

"दुष्ट! मेरी और राजमाता के विरुद्ध शिकायत करने आ गया। भविष्य में फिर कुछ कहा तो सिर कटवा दिया जाएगा, समझे। चल भाग यहाँ से।" सुरेश ने डपटकर उसे भगा दिया।

दूसरे दिन ही मन्त्रीपरिषद् एवं राजा देवमित्र ने सुरेश को गद्दी से उतारकर मँझले राजकुमार विरथ को सिंहासन पर बिठा दिया।

प्रजा इस परिवर्तन पर चकित थी। कुछ समझ नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है ?

दूसरे दिन महामन्त्री बोधायन ने महल की तमाम कलाकृतियाँ फेंक दीं। यह कहकर कि इनके स्थान पर सम्राट् की मूर्तियाँ लग सकेंगी।

"यह कला का अपमान हुआ है राजकुमार।" कलाकारों ने एक स्वर में न्याय माँगा— "न्याय कीजिए महाराज।"

राजकुमार विरथ को बोधायन महामन्त्री के विरुद्ध तो कुछ कहने का साहस नहीं हुआ परन्तु कलाकारों को समझा-बुझाकर शान्त कर दिया और उनकी कृतियों का मूल्य चुका दिया।

तीसरे दिन विरथ भी गद्दी से उतार दिए गए। उनके स्थान पर सबसे छोटे राजकुमार प्रताप गद्दी पर बिठाए गए।

तभी उसी दिन एक किसान ने पुकार लगाई— "महाराज हमने राज्य-कर अदा कर दिया तो भी देवमित्र महाराज ने हमसे कर माँगा और दस कोड़े लगवाए। देवमित्र तो अब राजा भी नहीं हैं, उन्हें कर माँगने का अधिकार भी नहीं। कुछ तो न्याय कीजिए।"

काँपते बूढ़े किसान की फरियाद सुनकर राजकुमार प्रताप तिलमिला उठे।

"जाओ सैनिको ! अपराधी देवमित्र को उपस्थित करो।" राजकुमार ने आदेश दिया।

"वे आपके पिता हैं। उनके लिए ऐसा मत कहो।" महामन्त्री बोधायन ने राजकुमार प्रताप

के तमतमाते चेहरे की ओर देखकर कहा

"[illegible] और राजा के समक्ष प्रजा एव न्याय सर्वोपरि होता है, पिता नहीं." प्रताप ने कड़कते हुए उत्तर दिया।

देवमित्र को उपस्थित किया गया। वे बन्दी की वेशभूषा में खड़े थे।

"किसान को लगाए गए दस कोड़े जितने ही देवमित्र को लगाए जाएँ।" प्रताप राजकुमार ने आदेश दिया।

एक सैनिक ने कोड़े लगाए और राजकुमार चुपचाप देखते रहे। सजा दे चुकने पर राजकुमार प्रताप गद्दी से उतरकर महामन्त्री बोधायन से बोले—

"जिस सिंहासन पर बैठकर मुझे अपने पूज्य पिता को दण्ड देना पड़े, ऐसा सिंहासन मुझे कदापि नहीं चाहिए।" फिर वे अश्रुपूरित नेत्रों से पिता देवमित्र की पीठ पर अपने हाथ फेरने लगे।

तभी हँसते हुए देवमित्र ने प्रताप को अपने सीने से चिपका लिया— "यह सब तो मात्र एक परीक्षा और सुपात्र राज्याधिकारी के चयन हेतु था बेटे! मुझे पता चल गया है कि मेरे इस राज्य के लिए सुपात्र और सुपुत्र तुम ही हो।"

फिर विधिवत् उत्सव मनाकर प्रताप राजकुमार को गद्दी सौंप दी गई।

☆

प्रतिशोध

त्युशैया पर पड़ा था, बैजनाथ ने अपने पिता के निकट बैठ
सेवा हो और आपकी कोई इच्छा हो तो कहो, मैं भरसक

अपनी संगीत कला के द्वारा अपने विपक्षी एवं प्रतिद्वन्द्वी
ऽ पीड़ा है।"

दुश्मन से बदला लूँगा। आप मुझे आशीष दें" बैजनाथ

ा ने आँखें मूँद लीं।

अब बैजनाथ के हृदय मे अपने पिता की इच्छा पूरी करने और पिता के प्रतिद्वन्द्वी से प्रतिशोध की भावना दिनोदिन बलवती हो रही थी एक शाम बैजनाथ हाथ मे कुल्हाडी लेकर पिता के प्रतिद्वन्द्वी-सगीतकार के घर जा पहुँचा वह उस समय सरस्वती देवी की आराधना मे लीन था।

बैजनाथ ने पीछे से आकर अपनी कुल्हाड़ी से उसे काट डालना चाहा, उसने जैसे ही कुल्हाड़ी से मारने के लिए ऊपर हाथ उठाये कि उसके अन्दर मन में एक विचार उठा— यह कैसा बदला? कैसा प्रतिशोध? नहीं, वह ऐसी हत्या करके अपने जीवन को कलंकित नहीं करेगा। वह ऐसा प्रतिशोध लेगा जिसमें उसके पिता का प्रतिद्वन्द्वी जीते जी जल-जलकर मरेगा।

वहाँ से ऐसा विचार करके वह लौट पड़ा। बैजनाथ ने रास्ते में मन ही मन संगीत साधना करने की ठानी।

किशोर बैज़नाथ अब संगीत की साधना में ऐसा लीन रहने लगा कि लोग बावरा समझने लगे, वह युवावस्था को पार कर गया। उसका पागलपन संगीत में बढ़ता ही गया।

बैजनाथ संगीत में ऐसा मस्त हुआ कि दूर-दूर तक उसकी ख्याति फैल गयी।

एक दिन वहाँ के राजा को खबर हुई तो अपने दरबार के मशहूर गायक के साथ वे बैजनाथ के घर आ पहुँचे।

तब बैजनाथ ने अपने संगीत का जादू ऐसा दिखाया कि 'वाह वाह' होने लगी। उन्होंने बैजनाथ से राजमहल चलने को कहा। पर वह नहीं गया, उसने ईश्वर के मुकाबले किसी व्यक्ति विशेष के दरबार में गाना संगीत और कला के लिए अनुचित ठहराया।

राजा के साथ आया मशहूर संगीतकार बैजनाथ के आगे नतमस्तक हो गया, बैजनाथ के समक्ष उसे अपना अस्तित्व एवं अपनी संगीत साधना अत्यधिक तुच्छ अनुभव हुई।

बैजनाथ ने अपने पिता की इच्छा को पूरा कर प्रतिशोध ले लिया था, पता है बच्चो! यही बैजनाथ आगे चलकर 'बैजू बावरा' के नाम से जाने गये, वे राजा और उनके साथ मशहूर गायक कोई और नहीं स्वयं अकबर महान् और संगीत सम्राट् तानसेन थे।

☆

नकल का फल

नामक बड़ी चिड़िया का गला बड़ा ही मधुर एवं सुरीला ?
के सभी जीव जन्तु एवं बस्ती के लोग मस्ती से झूम उठ
? कि एक दिन एक राजकुमार अपने घोड़े पर सवार होक
? घोड़े पर चढ़ा-चढ़ा थक गया था। धूप भी प्रखर हो उठी,

का घोड़ा भी स्वेदकणों से नहाया हुआ-सा प्रतीत हो रहा था।

अतः राजकुमार ने जंगल की घनी छाया में विश्राम करना चाहा। अतः राजकुमार अपने घोड़े को वहीं एक पेड़ से बाँधकर, स्वयं भी सो गया। वहीं उसी पेड़ के ऊपर, जिसके नीचे राजकुमार सोया था, वह बड़ी चील भी बैठी-बैठी विश्राम कर रही थी, यदा-कदा वह बीच-बीच में गुनगुनाने लगती, तो जंगल में मस्ती का झरना बहने लगता। उसी पेड़ से बँधे राजकुमार के घोड़े ने जब चील की मधुर आवाज सुनी तो घोड़ा प्रसन्नता से 'हिं-हिं' कर अपने अगले दोनों पैरों को उठाकर नाचने लगा।

मगर चील ने घोड़े की 'हिं-हिं' को सुना तो चील ने सोचा कि मैं भी क्यों न घोड़े की भाँति 'हिं-हिं' का स्वर उत्पन्न करूँ। और वह प्रयास करने में जुट गयी। निरन्तर प्रयास के कारण चील 'चींह-चींह' करके चीख उठी।

राजकुमार चील की चीख सुनकर जाग पड़ा। वह चील को मारने दौड़ा। चील ने क्षमा याचना करते हुये कहा— राजकुमार जी, क्षमा करें। मैं तो आपके घोड़े की नकल कर रही थी। किन्तु असफल रही। अपितु 'चींह-चींह' कर ही चीखने लगी।

मेरे राजकुमार जी ! मैं अत्यन्त मधुर गाती हूँ। यदि मैंने आपकी निद्रा भंग की है, तो मैं ही आपको मीठी तान सुनाकर सुलाऊँगी।

इतना कहने के पश्चात् वह गाने को उद्यत हुई। पर जैसे ही वह गाने को हुई उसे लगा कि वह गा न सकेगी। फिर भी वह गाने लगी। पर वह 'चींह-चींह' सी चीख उत्पन्न करने लगी।

राजकुमार ने क्रोधित व परेशान होते हुए दोनों हाथों से अपने कान ढँक लिये। घोड़े की आवाज की नकल के फलस्वरूप उसके गले की माँसपेशियाँ पूर्ववत् न रहीं। उनसे 'चींह-चींह' की आवाज उत्पन्न होने लगी।

तभी राजकुमार ने उसे क्रोध से देखते हुए छोड़ दिया- 'तुमने अपनी स्वाभाविक आवाज को त्याग कर दूसरे की नकल की। अतः तुम्हारा कंठ सदैव के लिये खराब हो गया। जाओ! मेरी आँखों से ओझल हो जाओ, और उम्र भर चीखती फिरो।

कहते हैं तभी से चील 'चींह-चींह' करती हुई, अपने आप पर पश्चाताप करती; ऊँचे आकाश में उड़ रही है।

☆

सच का मूल्य

यहाँ एक नौकर था, उसका नाम गंगू था। वह ईमानदार, परिश्रम

होते हुए भी गरीब था। वह अपने दस वर्षीय बालक रामू को अन्य
नढ़ा नहीं पा रहा था, इससे उसे बड़ी पीड़ा होती, उसकी इच्छा थी
ः लिखकर राजा की ऊँची नौकरी में लगे और बुढ़ापे में उसका बेटा
ाम दे जो वह जीवन में न तो स्वयं पा सका और न ही रामू को दे

एक दिन गगू ने अपने राजा चन्द्रगुप्त की महारानी के कीमती हीरे-मोती जडे सोने के आभूषण चोरी कर लिये, गगू ने निश्चय कर लिया था कि वह अपने बेटे रामू को अवश्य पढ़ायेगा।

सम्राट् चन्द्रगुप्त ने चोरी की खबर को सुना तो तुरन्त घोषणा करवा दी कि जो चोर का पता बतायेगा या 'पकड़वायेगा' उसे मुँह-माँगा इनाम दिया जायेगा।

गंगू के दस वर्षीय पुत्र को सम्राट् के यहाँ हुई चोरी का समाचार मिला और उसे अपने पिता की मनःस्थिति का भी पता चला। रामू ने पता कर लिया कि उसके पिता गंगू ने सम्राट् के घर चोरी की है।

रामू शीघ्र ही सम्राट् चन्द्रगुप्त के पास पहुँचा।

"क्या ?" चन्द्रगुप्त अवाक् रह गये जब उन्हें रामू ने अपने पिता को चोर बताते हुए चोरी का पता बता दिया।

सम्राट् ने तुरन्त सैनिकों को भेजकर गंगू को पकड़ लिया।

गंगू बेड़ियों में राजा के सामने लाया गया। उसको हाथ काटने का दण्ड दिया गया जो कि चोरी के लिए राज्य में निर्धारित था।

"बोलो रामू। तुम क्या इनाम माँगते हो?" चन्द्रगुप्त ने प्रसन्न होकर रामू से पूछते हुए कहा-

"हम तुम्हारी सच्चाई और राज्यभक्ति से बहुत प्रसन्न हैं। तुम मुँहमाँगा इनाम पाने के अधिकारी बालक हो।"

"आप मेरे पिता को छोड़ दीजिए और मुझे दण्ड दीजिए क्योंकि मैं ही इस चोरी का कारण हूँ। मेरी शिक्षा के लिए मेरे पिता ने चोरी की वरना वे एक स्वामिभक्त कर्मचारी रहे हैं, इससे आपको भी इंकार नहीं है।" रामू ने कहा।

अब तो चन्द्रगुप्त रामू की पितृभक्ति से और चकित होकर प्रफुल्लित हुआ। साथ ही उसे दुःख हुआ कि उसके राज्य में एक स्वामिभक्त कर्मचारी का होनहार बालक शिक्षा नहीं पा सक

ा था

सम्राट् ने फौरन गंगू को क्षमादान करते हुए रामू को बहुत सारा धन दिया और उसकी क्षा-दीक्षा का प्रबन्ध भी राज्य की ओर से किया, गंगू का वेतन बढ़ाया गया।

"महाराज मुझे धन नहीं चाहिए, मेरे पिता को क्षमादान देकर मेरा मुँहमाँगा पुरस्कार आप चुके हैं।" रामू ने कहा।

"नहीं बेटे रामू, यह तो कुछ भी नहीं है, सत्य का मूल्य तो कोई नहीं दे सकता, तुम्हारी चाई एवं पितृभक्ति के साथ देशभक्ति के गुणों के सम्मान स्वरूप मेरी ओर से यह भेंट है। स्वीकार कर लो।"

सम्राट् ने जब इतना आग्रह स्नेहपूर्वक किया तो रामू ने उस भेंट को स्वीकार कर लिया। में वह पढ़-लिखकर सम्राट् के राज्य में एक प्रमुख व्यक्ति बना।

दंभी का सिर नीचा

बाग में बड़े-बड़े वृक्ष थे, उसमें एक नीम के पेड़ पर दो व
अपने-अपने स्थान पर बैठ जाते थे।

समय हंसों की एक जोड़ी कहीं से उड़ते-उड़ते आकर उस
हंसों को वहाँ विश्राम करते जब कबूतरों ने देखा तो वे पूछने
? यहाँ क्यों विश्राम कर रहे हो? यह वृक्ष क्या तुम्हारे बाप व

लेकिन हस आराम से बैठे थकान दूर करते रहे उन्होने कबूतरो की अशिष्ट बातो का कोई उत्तर नही दिया और न उनकी उद्दडता का बुरा ही माना।

कबूतरों को जब कोई उत्तर नहीं मिला तो तेजी से 'गुटरगूँ-गुटरगूँ'' बोलने लगे और हंसों से कहने लगे—

''अरे, बोलते क्यों नहीं? क्या तुम्हारे मुँह में जुबान नहीं है?'' मन ही मन हंसों ने अपनी भाषा में तब परस्पर कुछ बातचीत की। लेकिन कबूतरों की किसी बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

तभी, जब कबूतर फिर बड़बड़ाकर 'गुटरगूं' करते हंसों को छेड़ने लगे तो हंसों ने नम्रता से बताया-

''हम मानसरोवर के राजहंस हैं। यात्रा के लिए निकले हैं। बेहद थक गये हैं, इसलिए कुछ समय के लिए यहाँ बैठकर आराम कर रहे हैं। आप चिन्ता न करें, हम शीघ्र ही यहाँ से चले जायेंगे।''

यह परिचय पाकर एक कबूतर फिर बोल उठा— ''तुम उड़ना-फुड़ना जानते भी हो या यूँ ही इतने बड़े-बड़े पंखों को लिये बैठे हो।''

हंस काफी थके थे, वे कबूतरों की ओर टकटकी लगाये शान्त बैठे रहे, उन्होंने इस बार भी कोई उत्तर नहीं दिया।

शैतान कबूतर शेखी से तभी अपने स्थान से उठे और वृक्ष के आसपास उड़ने लगे। हंस उन दोनों के व्यवहार पर मन ही मन हँस रहे थे। वे चुपचाप शान्त भाव से उन दोनों की नादान हकरतों को देख रहे थे। कबूतरों को यह सब बहुत बुरा लग रहा था।

''इस प्रकार घूर-घूरकर क्यों देख रहे हो? उड़ना जानते हो तो आ जाओ मैदान में।'' एकायक दोनों कबूतर फिर हंसों को छेड़ने लगे।

इस बार भी हंसों में से किसी ने उत्तर नहीं दिया, यह सोचकर कि दोनों कबूतर अपने आप चुप हो जायेंगे, कबूतरों ने हंसों को शान्त बैठे देखकर अब अन्तिम बार वाक-प्रहार किया, वे हंसों को धिक्कारते हुए बोले- ''दिखने में तो छैल-छबीले लगते हो। इतने बड़े-बड़े पंखों को क्या ऐसे ही प्रदर्शन के लिए सजाये हो या फिर ये किसी मतलब के भी हैं?'' यह कटाक्ष करते हुए कबूतर उड़कर पेड़ की दूसरी डाल पर बैठते हुए हाँफने लगे और 'गुटरगूँ-

गुटरगूँ' की आवाज जोर-जोर से करने लगे

कबूतरो को डाल पर बैठते देख आखिर एक हस मन्द मन्द मुस्कराता हुआ मीठे स्व में बोला- "भाई, तुम्हें तो अनेक प्रकार की उड़ाने आती हैं जो मैं और मेरे साथी नहीं जानते पर हम दोनों एक उड़ान जरूर जानते हैं, चाहो तो आ जाओ।"

"छिःछिः, केवल एक ही", एक कबूतर ने हंसों को लज्जित करने के उद्देश्य से कहा- "त तुम मेरे सामने क्या उड़ सकोगे? अच्छा चलो, तुम्हारी हम लोग एक उड़ान ही देख लेते हैं।"

इतना कहते ही कबतूर उड़ने लगे और तेजी से काफी दूर भी निकल गये, मगर पीछे से उड़ने वाले हंस अपनी समान और सामान्य गति से ही आकाश में उड़ चले।

उड़ते-उड़ते कई नदियाँ, मैदान, पहाड़ आदि पीछे छूटने लगे। बहुत दूर तक उड़ते-उड़ते कबूतर थककर चूर होने लगे, उनकी साँसें फूलने लगीं, उन्होंने अपनी स्थिति छुपाते हुए, हंसों से कहा– मालूम होता है तुम लोग थक रहे हो, चलो लौट चलें।"

कबूतरों की दुर्दशा हंसों से छुपी नहीं रह सकी, वे बड़े ध्यान से कबूतरों को लस्त-पस्त होते देख रहे थे, पीछे से उड़ते हुए! यही तो समय है इन उद्दंड कबूतरों को मजा चखाने का। हंसों ने बहुत की शान्त स्वर में कबूतरों को उत्तर दिया—

"तुम मेरी चिन्ता मत करो, अपने को सँभालो, मैं तो अभी दस गुना और उड़ सकता हूँ, चले चलो अभी तो।" इतना कहकर, शिथिल होते कबूतरों को देख हंसों ने अपनी-अपनी गतियाँ और बढ़ा दीं।

कबूतर कोई न कोई बहाना बनाकर वापस हो जाने के लिए कहते, परन्तु हंस यथावत शान्त भाव से उड़ते रहे, कबूतरों की दम फूलने लगी, और वे गिरने ही लगे थे कि हंसों को कबूतरों पर दया आ गयी, हंसों ने तुरन्त अपनी पीठों पर कबूतरों को बिठा लिया और वापस वृक्ष की ओर चल पड़े।

वृक्ष पर पहुँचकर कबूतर लज्जावश तेजी से हंसों की पीठों से उड़कर वृक्ष पर बैठ गये, वे अब अपनी डींग मारने की आदत एवं अशिष्ट व्यवहार, जो हंसों के साथ किया था, पर शर्मिन्दा भी थे।

थोड़ी देर हंस विश्राम करके अपनी यात्रा पर आगे उड़कर चले गये। ☆

न्यारा

हले समुद्र के पार एक जंगली और शक्तिशाली जाति
को पालते, शिकार करते, जश्न मनाते व खाते-पीते गीत

लोग जब जश्न मना रहे थे, सहसा आकाश में एक बाज
लड़की को उठा ले गया। लोगों ने तीर छोड़े, पीछा कि
और ऊँचा होकर जंगलों में खो गया।

अचानक बीस वर्ष बाद वह लडकी अपने साथ एक युवक को लिये लौट कर आ गयी उसने पूछने पर बताया कि वह बाज की पत्नी के रूप मे अब तक पहाड़ो पर रही. यह युवक उसी का पुत्र है। बाज अब मर चुका है।

बाज के पुत्र को सभी अचरज से देखने लगे। एकदम उसी बाज जैसा प्रतीत हो रहा था। वह गर्व से सीना फुलाये मौन था। उसने बस्ती के किसी भी बड़े की बात का जवाब न दिया और युवक सभी को हेय दृष्टि से देखता था।

बस्ती के लोगों ने गुस्से में आदेश दिया 'यहाँ बस्ती में रहने की गुंजाइश नहीं है, जहाँ इसके सींग समायें, चला जाये, युवक हँसा फिर गर्वीली चाल से जंगल में चला गया, युवक अत्यन्त सुन्दर था।

एक दिन उसने बस्ती में आकर एक सबसे सुन्दर लड़की का हाथ पकड़ लिया। लड़की ने उसे एक धक्का देकर अलग कर दिया। तभी युवक ने पलट कर लड़की को उठाकर जमीन पर पटक दिया फिर अपनी ऐड़ी से लड़की के सीने को इतना रौंदा कि उसके मुँह से खून का फौब्बारा फूट पड़ा। लड़की ने एक आह भरकर दम तोड़ दी।

बस्ती के लोगों में इस घटना से भयानक क्रोध की आग और बदले की धारा फूट पड़ी। युवक अब बस्ती में अपनी गज समान गर्वीली चाल से दिन भर घूमता।

तभी बस्ती के कुछ बहादुर युवकों ने उसे घेरकर एक मोटे रस्से से बाँध दिया। फिर कठोर दण्ड देने की योजना बनाने लगे।

परन्तु वह युवक फिर भी मुस्कराता रहा। गाँव के बड़े-बूढ़ों ने निर्णय लिया कि उसे ऐसा दण्ड दिया जाये ताकि वह भी तड़प-तड़प कर प्राण छोड़े। तीर, तलवार या पत्थर से मारना किसी को नहीं जँचा और न ही इन हथियारों का उसके वज्रमय शरीर पर कोई असर होता, उसका शरीर फौलाद से भी कठोर था।

बहुत विचार करने के बाद उस युवक को बन्धनमुक्त कर दिया गया, उसे आजाद और अकेला जीवनभर घूमने दिया जाये। यही उसकी सजा एकमत होकर घोषित की गयी।

उसे अब नितान्त एकान्त में घूमने देने हेतु जंगल में छोड़ दिया गया। उसका नाम लारा रख दिया गया लारा अर्थात् 'लांछित और निष्कासित'।

लारा प्रायः बस्ती के किनारे आता और खूनी आँखों से सबको हँसता-मुस्कराता देखता। एक दिन जब वह बस्ती के अन्दर आया ही था, तो लोग उस पर आक्रमण करने के लिये लपके। वह अपनी जगह अडिग हो गया, हिला तक नहीं।

तभी एक बूढ़े ने उसके इरादे को भाँप चिल्ला कर बताया, 'उसे हाथ मत लगाना, वह मरना चाहता है।'

लोगों ने अपने हाथों को नियन्त्रित कर रोक लिया, लोग नहीं चाहते थे कि जिसने लोगों को इतना आतंकित कर, यन्त्रणा पहुँचाई, वह इतनी आसानी से मर जाय। सभी लोग उस पर हँसने लगे।

लारा यह देखकर लोगों पर पत्थरों की मार करने लगा। लोग इधर-उधर भाग गये। इसी बीच लारा ने धरती से एक बड़ा चाकू उठाया,जो वहाँ भीड़ में किसी का रह गया था और अपने सीने पर मारा। चाकू टूटकर नीचे गिर पड़ा मानों किसी पत्थर से टकरा गया हो।

इसके बाद लारा अपना सिर ज़मीन पर पटकने लगा, ज़मीन पर वह सिर टकराता वहीं एक गड्ढा बन जाता।

'वह मर भी नहीं सकता।' लोग खुशी से चीखे और उसे वहीं छोड़कर चले गये।

लारा तब से अकेला मरने के लिये तड़पता घूम रहा है। धूप और गर्मी ने उसके शरीर को सुखा दिया है। मगर वह चैन से मर भी नहीं सकता।

रूस की जंगली जातियों में रात में चाँदनी के समय जब बादलों की छाया पृथ्वी और चट्टानों पर पड़ती है तो उसे लारा कहते हैं। उनका मानना है कि गर्वीले और पाप करने वाले ऐसे ही लारा बनकर भटकते हैं।

☆

मैत्री-बल

ालाब के किनारे के पेड़ पर एक सुन्दर कबूतरी रहती थी। न
ूतर उड़कर आया। उसने कबूतरी से शादी करने का प्रस्ताव
तुम्हारे कुछ मित्र हैं?'' कबूतरी ने साक्षात्कार में मात्र अकेला
ो।''

ाओ, पहले मित्र बनाओ। फिर संसार बसाने और मुझसे
ूतरी ने टका-सा उत्तर दे दिया।

के मन को कबूतरी भा गई थी, उसकी बात भी उसे दमदार
कछुए से मैत्री की, फिर जंगल के राजा सिंह और पक्षीरा

ने तब कबूतर से शादी कर ली, दोनों उसी पेड़ पर रहने ल

एक दिन शिकारियो का एक दल जगल मे आया वह दल शाम को उसी पेड के नीचे ाकर रुका, रात को जब शिकारियो ने खाना पकाने के लिए आग जलाई तो धुएँ से कबूतर-बूतरी के बच्चे चिल्लाने लगे।

बच्चों की आवाज सुनकर शिकारियों ने प्रसन्नता से झूमकर कहा, "अब तो इन्हीं कबूतरों ौर बच्चों का स्वादिष्ट भोजन करेंगे।" इतना कहकर, एक शिकारी हाथ में मशाल लेकर उस ड़ पर चढ़ने की तैयारी करने लगा।

कबूतरी ने घबराकर कबूतर से कहा— "देखो, ये लोग हमारे बच्चों को पकड़ने आ रहे .....तुम भागकर अपने मित्र बाज के पास जाओ।"

बाज फौरन ही कबूतर की सहायता के लिए आ गया। बाज तालाब में से अपने चोच पानी भरकर पेड़ पर चढ़े शिकारी की मशाल पर गिराने लगा। बुझी मशाल को जलाने के ाए शिकारी बार-बार नीचे जाता और पेड़ पर चढ़ता तो बाज फिर पानी भरकर लाता और शाल बुझाता। सबेरा हो चला था और बाज थकता जा रहा था।

तभी कबूतरी की सलाह से कबूतर अपने दूसरे मित्र कछुए के पास पहुँचा। कछुआ अपने त्र को सहायतार्थ कीचड़ में सना लिपटा आया और पेड़ के नीचे जलती आग पर लोटने लग या। आग बुझ गयी।

इस पर सारे शिकारी उस कछुए को पकड़ने चले कि इसे ही भूनकर खाया जायेगा। छुआ तेजी से तालाब की चिकनी मिट्टी में होकर पानी में कूद गया। शिकारी दौड़ते आये तो कनी मिट्टी में फिसल कर गिर पड़े।

इसी बीच कबूतर सिंह राज के पास मदद माँगने गया। शेर दहाड़ता हुआ आया तो शेर ी दहाड़ सुनकर चिड़ीमार शिकारी भाग खड़े हुए।

कबूतर का परिवार मित्रों की सहायता और उनकी शक्ति के कारण सुरक्षित बच गया। बूतरी ने सभी मित्रों को धन्यवाद देते हुए कबूतर से कहा-

"मित्रों के कारण ही हमारा परिवार बच सका है। आपत्ति के समय मित्र ही मदद करते । इसलिए मित्रों की संख्या हर छोटे बड़े को बढ़ाना चाहिए।"

कबूतर ने 'गुटरगूँ' करते हुए कबूतरी की बात को स्वीकारा और समर्थन दिया।

☆

तीन लाख की बातें

एक गाँव का मुखिया था। एक दिन उसके दरवाजे पर एक
खिया ने खूब सेवा की। सत्कार किया। साधु उसकी सेवा से अत्य
ाने लगा तो उसने कहा—

"मैं तुम्हें तीन लाख रुपये की तीन बातें बताता हूँ।"

महाराज की कृपा है ' मुखिया ने विनम्रता से सिर झुकाया

"पहली बात यह है कि सदैव प्रातः चार बजे उठकर गाँव का भ्रमण करना।" साधु ने बताया।

"अच्छा महाराज।" मुखिया ने स्वीकारा।

"दूसरी बात- अतिथि का स्वागत करना और तीसरी बात यह कि अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखना।" इतना बताकर साधु चला गया।

मुखिया अब प्रातः चार बजे उठकर गाँव में घूमने निकल जाता। एक बार जब वह गाँव मे एक विधवा बुढ़िया के घर के सामने होकर निकल रहा था, तो बुढ़िया अपनी बहू से कह रही थी-

"आज मैंने सपना देखा कि अपने मुखिया को सर्प ने काटा है।"

"तो क्या मुखिया जी की मृत्यु सर्प के काटने से होगी?" बहू ने सशंकित मन से अपनी विधवा सास से पूछा—

"यह हो सकता है बहू, क्योंकि सुबह का सपना सत्य होता है।"

मुखिया यह सुनकर चौंका और कुछ-कुछ डरा भी। लेकिन साधु की बात को मन में रखा और सर्प के स्वागत की तैयारी शुरू कर दी।

मुखिया ने अपने घर के दरवाजे से अपने शयन कक्ष तक गुलगुले रोंयेदार गद्दे बिछवाए। उन पर महकदार फूल बिछवाए और रास्ते में जगह-जगह दूध के कटोरे रखवाए।

तभी दो-तीन दिन बाद बड़ा काला सर्प मुखिया के घर में दरवाजे से प्रविष्ट हुआ। रास्ते मे गद्दों पर फूलों की सुगन्ध में लोटता, दूध पीता, वह मुखिया के शयन कक्ष तक आया।

अब तक दूध पी-पीकर सर्प का पेट भर चुका था। उसने सोचा कि वह भी कैसा मूर्ख और कृतघ्न है जो उसका स्वागत करने वाले मुखिया को ही काटने जा रहा है। नहीं, वह ऐसा नहीं करेगा। स्वागत-सत्कार का बदला उसे काटकर नहीं देगा।

सर्प फिर अपना इरादा बदल कर वापस लौट गया।

मुखिया ने जब सर्प को वापस होते देखा तो बडा खुश हुआ और चैन की नींद लेने अपनी पत्नी के कक्ष मे गया। वहाँ पत्नी को देखते ही वह क्रोध से पागल होने लगा।

मुखिया ने देखा कि उसकी पत्नी सो रही थी। उसके पास कोई पुरुष लेटा हुआ था। मुखिया ने अपनी बन्दूक उठाई। लेकिन तभी उसे साधु की तीसरी बात ध्यान आ गई। उसने अपने क्रोध को नियन्त्रित किया।

वह पत्नी के निकट पहुँचा। उसने साथ लेटे उस युवक को पलटकर जगाया तो वह चकित रह गया। वह तो उसकी अपनी इकलौती जवान पुत्री थी, जो शाम को एक नाटक में पुरुष-वेश में अभिनय करके आई थी और वैसे ही माँ के पास लेट गई। फिर सो गई थी।

मुखिया को अब वास्तव में लग रहा था कि साधु ने उसे तीन बातें जो सीख में दीं, वे तीन लाख से भी बढ़कर सिद्ध हो चुकी थीं।

परोपकारी मदारी

दस ही बजे थे। सुबह से ही गर्म हवा और धूल ने आतंक
ू' करती हवा तेजी से चल रही थी। तो भी एक कस्बेनुमा श
ड पीपल के नीचे एक मदारी अपने बन्दर के करतब दिखाता
मा किए था। लोग मौसम की धूर्तता को उपेक्षित किए बन्द
न्द ले रहे थे।

पेड़ के नीचे भीड़ के पास आकर रुकी। कार में से एक भव्
निकला। उसी के साथ कार के दूसरी तरफ वाले आगे के दरव

ड्राइवर निकला

‘ आप थोड़ा नाश्ता पानी कर लीजिए, तब तक मै गाड़ी को ठीक और ठडा करता हूँ ड्राइवर ने विनम्रता से उस अधेड़ पुरुष से निवेदन किया।

“ठीक है रामसिंह।” फिर उस पुरुष नें गाड़ी में बैठे अपने पन्द्रह वर्षीय पुत्र को आवाज दी— “दीपक, आओ तुम भी बाहर हवा में आ जाओ।”

नाश्ता-पानी करने के बाद वे दोनों पिता-पुत्र टहलते-टहलते यकायक उस मदारी के मजमे में जा खड़ें हुए। पिता ने पुत्र के मन की बात शायद समझ ली थी। क्योंकि, दीपक बार-बार उस मजमें की तरफ देख रहा था, जहाँ बन्दर कलाबाजियाँ कर रहा था। ड्राइवर गाड़ी के लिए पानी लेने गया था। कार के दरवाजे बन्द करके पिता-पुत्र दीपक को साथ ले समय गुजारने की गरज से भी मदारी के मजमें में शामिल हो गए थे।

बन्दर अनेक प्रकार की कलाबाजियाँ और ससुराल जाने का नाटक दिखा रहा था। लोग आनन्द ले रहे थे। मदारी भी मस्त होकर डमरू बजा रहा था। बन्दर भीड़ में लोगों की ओर देखता हुआ अपने करतबों का प्रदर्शन करता बीच-बीच में घुड़की भी दिखाता तो सभी लोग हँस पड़ते थे।

अभी खेल खत्म ही हुआ था कि बन्दर ने लपककर भीड़ में एक नौजवान के सिर पर सवारी गाँठ ली और लगा उसे नोंचने। मदारी दौड़कर आया। बन्दर को पकड़ा। फिर उस नौजवान को।

“बेटा, मेरा बन्दर बड़ा करतबी है।” मदारी उस नौजवान से बोला- “निकाल, क्या मारा है?”

“क्या मतलब है?” नौजवान ने आँखें तरेरी।

“मतलब यह कि आँखें तो तरेरो मत। जो बटुआ मारा है, उसे मेरे हवाले कर दो। मेरे मजमे में जेबकटी नहीं चलेगी। बन्दर की नजरें तुम जैसे गिरहकटों पर भी रहती हैं। मैंने उसे इस बात की पूरी शिक्षा दी है कि जेबकतरे के सिर पर फौरन हमला करके सवारी कर लो।”

इतनी वार्ता सुनते ही लोग, जो अभी बन्दर की कलाबाजियाँ देख रहे थे, अब अपनी जेबें देखने लगे। यह देखते ही वह जेबकतरा भाग खड़ा हुआ। जैसे ही वह भागा कि मदारी

ने बन्दर छोड दिया बन्दर ने छलाग लगा दी और तीन छलागों मे ही जेबकतरे को धरदबोचा

"अरे! मेरा पर्स।" यकायक वह कार वाला व्यक्ति अपनी जेब पर हाथ फेरते ही चौंका। कहीं वह जेबकतरा मेरा पर्स तो नहीं ले उड़ा। यह सोचते ही वह फौरन उसकी ओर लपका। ड्राइवर भी आ गया था। ड्राइवर ने जेबकतरे के चार झापड़ रसीद किए कि उसने पर्स सामने कर दिया।

फिर तो सभी लोग उस जेबकतरे पर टूट पड़े। मगर कार वाले सज्जन पुरुष ने आगे बढ़कर उस युवा जेबकतरे को और पिटने से बचा लिया।

"इसे पुलिस में दे दो।" लोग कहने लगे।

"नहीं-नहीं, जाने दो।" कार वाले महोदय ने उसे जाने दिया और फिर कभी ऐसा गलत कार्य नहीं करने की हिदायत दी।

"मैं बेकारी से तंग आ गया था।" जेबकतरे ने आँसू बहाकर कहा।

"यह लो मेरा पता, तुम वास्तव में परिश्रम करना और जेबकतरी छोड़ना चाहते हो तो मेरे पास कानपुर चले आना। मैं तुम्हें अपने कारखाने में काम दूँगा।"

इतना कहकर वह फिर मदारी की तरफ गए। मदारी अपना सामान बाँधकर बन्दर को अपने साथ ले जाने की तैयारी कर रहा था।

"यह लो भाई अपना इनाम।" एक सौ का नोट देते हुए कारखाने वाले व्यक्ति ने कहा— "तुम्हारा बन्दर तो वास्तव में बहुत बड़ा कलाबाज है।"

"सौ रुपए!" मदारी चौंका।

"हाँ भई, उस पर्स में कुछ हीरे भी थे जो मेरे खानदानी थे। एक विशेष उद्देश्य से मैं उन्हें अपने एक गुरु के पास लेकर जा रहा था। इन हीरों की कीमत बहुत है।" कार वाले महोदय ने बताया।

"सेठ जी, मुझे इनाम नहीं चाहिए। मैंने तो अपने मजमे को बदनामी से बचाने के लिए अपना ही काम किया है। फिर सारा करतब तो मेरे इस बन्दर का है।" मदारी रुपये लेने से इन्कार करता हुआ बोला।

'तो अपने बन्दर के लिए ही ले लो '

"बन्दर ले, तो दे दीजिए।" मदारी ने बन्दर की ओर देखकर कहा— "मोती, तुझे सेठजी रुपए दे रहे हैं, ले लो।"

बन्दर ने नोट ले लिया। फिर उसे देखा, सूँघा और बाद में उसे छोड़ दिया।

"देखा साहब! उसे भी नहीं चाहिए। उसे बस पेट भरने का चना-गुड़ चाहिए, सो वह अपनी कमाई कर लेता है।"

कार वाले सज्जन बहुत प्रभावित हुए। वे फिर बोले- "मदारी, तुम कुछ तो मेरा मन रखते।"

"सेठ, अगर आप समर्थ हों, तो मेरे गाँव में एक छोटा सा स्कूल खुलवा दीजिए। इससे गाँव के बच्चे पढ़ेंगे और अच्छे आदमी बनेंगे।" मदारी भावुक होकर बोला—

"मैंने अपने पिता की बात नहीं मानी सो मदारी बनना पड़ा। फिर मेरे यहाँ स्कूल भी नहीं था... मैं चाहता हूँ कि मेरे और मेरे गाँव के बच्चे मदारी न बनें।

"ऐसा क्यों सोचते हो मदारी, अगर तुम और यह बन्दर न होते तो मैं तो लुट गया था।"

"हाँ साहब, पर हर बन्दर ऐसा थोड़ा ही होता है।" उस मदारी ने बन्दर पर हाथ फेरा— "यह तो मोती ही ऐसा है।"

"अच्छा, तुम्हारा गाँव कहाँ है ?"

"यहाँ से चार मील दूर पश्चिम में।"

फिर मदारी ने अपना और गाँव का पूरा पता परिचय दिया। कार चली गई।

कुछ ही समय बाद मदारी के गाँव में बच्चों के लिए एक स्कूल की नींव रखी गई। मदारी का सपना पूरा हुआ। वह चाहे खुद अनपढ़ रहा उसने अपनी चतुराई से गाँव के बच्चों को अनपढ़ रहने से बचा लिया।

☆

उपकार का बदला

गाँव में मतोले नाम का एक गरीब आदमी रहता था। वह ग
कर अपना जीवन व्यतीत कर रहा था।

ने की पत्नी दुलारी ने उससे कहा-

परदेश जाकर कुछ काम क्यों नहीं करते? यहाँ गाँव में
बाहर कुछ धंधा पानी करना। ऐसे यहाँ लोग हमें इज्जत

मतोले के मन में दुलारी की सलाह बैठ गई। वह गाँव से बाहर जाने के लिए तैयार हो गया। फिर दुलारी ने थोड़ा कलेवा बनाकर मतोले को रास्ते में खाने के लिए दे दिया।

मतोले निरन्तर दो दिन तक चलता रहा। तीसरे दिन दोपहर में जब मतोले एक घने जंगल मे छायादार वृक्ष के नीचे सुस्ता रहा था कि तभी एक शेर लँगड़ाता हुआ उसके पास आ गया।

"डरो नहीं, मेरे पैर में काँटा चुभा है।" शेर ने भयभीत मतोले को देखकर कहा। फिर उसने मतोले को अपना पंजा दिखाते हुए कहा— "अगर तुम मेरे पैर का काँटा निकालकर मुझे पीड़ा मुक्त करोगे तो मैं तुम्हारा उपकार मानूँगा।"

"काँटा निकल जाने पर तुम मुझे मारकर खा तो नहीं जाओगे?" मतोले ने सशंकित मन से पूछा।

"नहीं, हम जानवर लोग आदमी की तरह नहीं होते। हम लोग उपकार करने वाले के प्रति कृतघ्न नहीं होते। ओह! बड़ा दर्द हो रहा है।" शेर पीड़ा से कराहने लगा।

भोले-भाले मतोले को दया आ गई। उसने शेर का पंजा अपने हाथ में लेकर बड़ी सुगमता एवं कुशलता से उसका काँटा निकाल दिया। फिर अपनी धोती का एक कोना फाड़कर उसके घाव पर बाँध दिया।

काँटा निकल जाने पर शेर को बड़ी राहत मिली उसने मतोले से पूछा-

"मित्र, यह तो बताओ कि तुम इस घने जंगल में अकेले कहाँ जा रहे थे?"

"कुछ नहीं शेर भाई! मैं बड़ा निर्धन हूँ। मैं अपनी पत्नी की सलाह मानकर धन कमाने परदेश-जा रहा हूँ।" मतोले ने शेर को बताया।

"अच्छा तो तुम माल धन के लिए परदेश जा रहे हो?"

"हाँ शेर भाई!" मतोले ने स्पष्ट बताया।

"फिर ठीक है। आओ जरा मेरी गुफा तक, मेरे साथ-साथ।" शेर ने गरजकर कहा।

मतोले डरता-डरता चुपचाप शेर की गुफा की तरफ चल दिया। वहाँ पहुँचकर शेर ने सोने के आभूषणों का ढेर दिखाते हुए कहा— 'ले लो जितना चाहो।'

'इतना सोना तुम्हारे पास कैसे आया?' मतोले ने चकित होकर शेर से पूछा

"मैं जंगल का राजा हूँ और राजा के पास कमी किस चीज़ की ?" शेर ने फिर गरजकर :ताया—

"जंगल में आने वाले धनवान लोगों का मैंने शिकार किया और उनका धन यहाँ गुफा में.... मेरे राजकोष में जमा हुआ।"

मतोले हतप्रभ खड़ा था। इतना सोना और पैसा उसने पहले कभी नहीं देखा था।

"अब देर मत करो। शीघ्र यथाशक्ति इसमें से धन एवं सोना लेकर अपने घर जाओ।" शेर ने मतोले को चकित खड़ा देखकर आदेश दिया।

फिर क्या था, मतोले ने एक पोटली भरकर सोना अपने सिर पर लादा और अपने घर सकुशल आ पहुँचा।

दुलारी ने जब सारी कहानी सुनी तो वह ईश्वर को धन्यवाद देती हुई मतोले को धन सहित कुशल पाकर खुशी से झूम उठी। मतोले अपनी सहृदयता एवं उपकार की प्रवृत्ति से अब धनवान हो गया था।

☆

अव्वल आने का नुस्खा

ःस साल का राजेश छठी क्लास में पढ़ता है। वह पढ़ने में हो
। मगर इम्तहानों में उसके अच्छे नम्बर नहीं आते थे। वह ज्य
घंटे लगातार पढ़कर ही उसका दिमाग थकान महसूस करने ल
जब भी अपने पिताजी को देखता, तो पाता कि वे कुछ न कुछ
सके पिताजी अपने ऑफिस में कचहरी की फाइलों और मुकद
कताबें पढ़ रहे होते। घर में रात को अखबार, छुट्टी के दिन में
होते।

ाजेश को मन ही मन हैरानी होती कि उसके पिताजी लगातार इ
ते क्यों नहीं ? राजेश लाख सोचने पर भी इसका राज खोज

इच्छा होती कि वह पिताजी जितना पढ सके वह मन ही मन सोचता रह जाता

एक दिन राजेश ने हिम्मत करके पूछ ही लिया, पिताजी, आप इतना कैसे पढ़ लेते हैं ? हर समय कुछ न कुछ पढ़ते ही रहते हैं। आप क्या थकते नहीं ? मैं तो घंटे, दो घंटे में ही थक जाता हूँ। इसका राज क्या है ?'

पिताजी ने राजेश को मुस्कराकर देखा। फिर बोले, 'बेटे, दरअसल दिमाग कभी थकता नहीं है। वह तो हर समय कुछ न कुछ काम करता ही रहता है या करते रहना चाहता है। यह हम भूल करते हैं, जो दिमाग को थका हुआ समझ लेते हैं।'

'पर मैं तो थकान महसूस करता हूँ।'

'नहीं बेटे। यह तुम्हारी गलतफहमी है। असल में दिमाग जब एक ही चीज़, एक ही विषय से ऊब जाता है तो तुम यह समझने लगते हो कि तुम थक गए हो। लेकिन अगर तुम पढ़ते वक्त अपना विषय बदल दोगे, तो ऐसा महसूस नहीं होगा', पिताजी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए समझाया।

'क्या मतलब पिताजी ?' राजेश ने तफसील से जानना चाहा।

'मतलब यह राजेश, कि जब तुम हिन्दी पढ़ते-पढ़ते थकान महसूस करो, तो अंग्रेजी पढ़ने लग जाओ। अंग्रेजी पढ़ते-पढ़ते थकने लगो, तो गणित करने लगो। इस प्रकार तुम चाहो तो अधिक से अधिक वक्त पढ़ाई में लगाकर बहुत होशियार बन सकते हो।' इतना समझाकर राजेश के पिताजी दुबारा अपना अखबार पढ़ने लगे।

दिमाग की इस अद्भुत क्षमता के बारे में जानकर राजेश को हैरानी और खुशी हुई।

आजकल राजेश को सचमुच ही दिमाग के जल्दी थकने का अनुभव नहीं होता। वह ज्यादा से ज्यादा वक्त अपना पढ़ाई में लगाने लगा है। सालाना इम्तहान नजदीक है उसने अपना लक्ष्य तय कर लिया है कि इस बार तो क्लास में फर्स्ट आकर दिखाएगा।

☆

भेड़िये के जूते

। और खरगोश मित्र थे। दोनों शिकार की टोह में साथ-स
घूमते अक्सर उनके पैर जंगल के पथरीले रास्तों और कांट

ने जंगल में घूमने के लिए पैरों की सुरक्षा दृष्टि से जूते बन
ही के पास गए। वह मोचीगिरी करता था। साही ने भेड़िया
र जूते बना दिए।

ाकर दोनों खुश हो गए। तभी भेड़िए ने देखा कि खर
ार रंगीन फीतों वाले हैं। खरगोश के जूतों की सुन्दरता दे
कहा—

'खरगोश यार, तुम मुझे अपने जूते पहनने दो '

'तुम्हारे पैरों में मेरे छोटे जूते नहीं आ पाएँगे।' खरगोश ने बताया।

'नहीं, तुम उतारो तो, मैं किसी भी तरह पहन लूँगा।'

भेड़िये ने जिद की और दोस्ती का वास्ता दिया। साथ ही उसने खरगोश को धमकी दी कि अगर उसने जूते नहीं दिए तो वह उसे मार डालेगा।

खरगोश ने डर के मारे जूते उतार दिए और जंगल में चला गया।

भेड़िये ने बहुत कोशिश की पर खरगोश के सुन्दर लेकिन छोटे जूते भेड़िये के पैरों में नहीं आए। आखिर वह हारकर खरगोश के पास गया। मगर खरगोश फिर उससे कभी नहीं मिला। खरगोश उसके बड़े जूते लेकर चंपत हो चुका था। वह भेड़िये की धमकी का बुरा भी मान गया था- भला यह भी कोई दोस्ती है जो अपने ही दोस्त को धमकाये-सताये, उससे तो दूर ही रहना ठीक।

चालाक बूढ़ा

गाँव में बूढ़ा और बुढ़िया रहते थे। वे निःसन्तान थे। बूढ़ा
करता। मगर वह खाने-पीने के मामले में लालची था, बुढ़ि

दिन बूढ़े ने बुढ़िया से कहा कि वे दोनों क्यों न एक तोता
जायेगा। बुढ़िया ने अपनी स्वीकृति दे दी।

ढ़ा एकाएक खुश होकर कहने लगा— "हम उस तोते क
की कोटर में रखेंगे। तुम जब मेरा खाना लेकर आया करोगी त
ान और दूध-मलाई लाया करना। इससे तो जल्दी बड़ा हो

बुढिया इस बात पर राजी हो गई और रोज-रोज बढिया भोजन तथा दूध मलाई लाने लगी बूढा मजे से पेड की कोटर मे जाकर सारा का सारा बढिया भोजन हजम करने लगा

एक दिन जब बुढ़िया पकवान और स्वादिष्ट भोजन लाई और बूढ़ा कोटर में जाकर खाने लगा तो बुढ़िया ने सोचा कि जरा देखा जाय कि तोता कितना बड़ा हो गया है। बुढ़िया ने जब पेड़ की कोटर में झाँक कर देखा तो वहाँ बूढ़ा बैठा हुआ मजे से भोजन कर रहा था। वहाँ पर कोई तोता-ओता नहीं था।

बुढ़िया बूढ़े की चालाकी पर क्रोधित होकर मायके जाने की तैयारी करने लगी। उसने बूढ़े का साथ छोड़ने की तैयारी कर ली। बुढ़िया ने अपना सामान-सट्टा एक बड़े-से बक्से में रखा और रास्ते में खाने के लिए रोटियाँ पकाने लगी।

बूढ़ा बड़ा चिन्तित हुआ। वह बुढ़िया को मनाने का उपाय सोचने लगा। तभी वह बुढ़िया के बड़े से बक्से में कपड़ों के नीचे दुबक कर बैठ गया।

बुढ़िया ने जल्दी-जल्दी रोटियाँ सेंकीं और बक्से में ऊपर रखकर बक्से को बन्द कर दिया। वह फिर बक्से को सिर पर उठाकर चल पड़ी।

रास्ते में बहुत दूर जाकर बुढ़िया को भूख लगी। वह थक भी गई थी। अतः वह एक स्थान पर बक्से को उतारकर बक्से को खोलने लगी।

बक्सा खोलकर उसने देखा कि रोटियाँ तो सारी गायब हैं और वह बूढ़ा बड़ी करुण दृष्टि से बुढ़िया को टुकुर-टुकुर ताक रहा था।

थकी और भूख से व्याकुल बुढ़िया ने जब बूढ़े को इस प्रकार बक्से में देखा तो वह खिलखिला कर हँस पड़ी। वह अपने बूढ़े के साथ वापस घर लौट आई। दोनों फिर प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे।

☆

सच्ची दीवाली

आठ वर्षीय सोनू ने घर आकर अपनी माँ से जिद की कि उसे पटा
सभी बच्चे पटाखे और फुलझड़ियाँ खरीद-खरीदकर दीपावली पर
हे थे। बिना पटाखों और फुलझड़ियों के दीपावली का आनन्द द

माँ ने सोनू को समझाया कि यह तो मूर्ख बच्चों का खेल है जो
लगाकर तमाशा देखते हैं। वह तो पितृहीन और गरीब है। उसके
ों के लिए मचलना अच्छी बात नहीं।

उसे क्या पता कि किस प्रकार उसकी माँ सिलाई-कढ़ाई करके
-पोषण कर रही है।

मगर सोनू कहाँ मानने वाला था उसने कहा 'माँ तुम तो हमेशा ही ऐसी बाते करती रहती हो मुझे पैसे दो मै बड़ा होकर खूब पैसे कमाऊँगा, तब तुम्हे लौटा दूँगा.'

सोनू के मुख से ऐसी भोली बातें सुन और पटाखों के प्रति उसकी ललक देखकर माँ ने न जाने क्या सोचकर बीस रुपये का नोट उसे बड़ी उदासी के साथ पकड़ा दिया, 'ले, जाकर खरीद ला पटाखे।'

पटाखे-फुलझड़ियाँ खरीद लेने के बाद पता नहीं क्यों सोनू कुछ गम्भीर सोच में पड़ गया। वह मन ही मन विचारने लगा कि उसे सचमुच ही पैसों के लिए अपनी माँ से इस प्रकार नहीं मचलना चाहिए था।

उसकी माँ कितनी देर रात तक जागकर कपड़े सिलकर कुछ रुपए कमा पाती है। पर अब वह करे भी तो क्या करे? उन रुपयों के तो वह पटाखे और फुलझड़ियाँ खरीद चुका था। दुकानदार अब यह पटाखे वापस नहीं लेगा।

फिर उसके मन में एक विचार आया। वह खुश होकर अपने सारे पटाखों और फुलझड़ियों को लेकर मोहल्ले के मन्दिर के पीछे चला गया। वहाँ उसने छोटी-सी दुकान एक चबूतरे पर सजा ली।

एक ही घंटे के भीतर उसने बीस रुपए की खरीदी हुई आतिशबाजी तीस रुपए में धीरे-धीरे करके बेच दी।

वह खुशी से उछला। फिर बाजार गया। तीस रुपए के पटाखे और ले आया। फिर बेचा। इस प्रकार उसने चार-पाँच बार दौड़-भाग कर रात के आठ बजे तक दो सौ रुपए बना लिए।

दरवाजे पर खड़ी माँ सोनू की प्रतीक्षा में परेशान थी। तभी सोनू उछलता-कूदता घर की तरफ आता दिखा।

'इतनी सुबह का निकला अब तक कहाँ रहा था?' पूछते ही माँ ने सोनू के गाल पर पटाखे की आवाज जितना तमाचा जोर से जड़ दिया।

सहमकर सोनू ने अपने गाल पर हाथ रख लिया।

फिर धीरे से उसने सारी बात अपनी मॉ को बताकर रुपए भी माँ के हाथ पर रख दिए फिर कभी फिजूलखर्ची नही करने की कसम भी खाई और पढाई के साथ-साथ मॉ का हाथ बँटाने का फैसला भी लिया।

माँ की आँखों में आँसू भर आए। फिर माँ ने खुशी से सोनू को कलेजे से लगा लिया, 'मेरे लाड़ले, मेरे जीवन की दीपावली तो तब होगी, जब तू बड़ा होकर अपने सत्कर्मों का उजाला देश भर को देगा। तभी मेरे लिए सच्ची दीपावली होगी।'

विद्या बढ़ाने का रहस्य

मय कुछ न कुछ करती रहती हैं। कभी मैं उनको स्वेटर बुनते देखत
कोट की किनारी और कभी मेजपोश। घर भर के लोगों के लिए कोई
र व्यस्त रहतीं।

तर साल की उम्र देखकर नहीं लगता कि वे किसी लड़की से कमजोर
चूल्हे बनाना, चबूतरे की झाड़ू तो किसी को न लगाने देतीं। कहतीं—
ने बुढ़ापा नहीं आता और शरीर चुस्त बना रहता है।'

कुछ उदास थीं।

क्यों हो?' मैंने पूछा।

'मेरा मन पढने को होता है दादी अम्मा ने यकायक अपनी उदासी का कारण बताया उस जमाने मे लड़कियो को पढ़ाया नही जाता था लेकिन बताते बताते दादी अम्मा कहीं खो गईं।

'अरे अम्मा हम तुम्हें पढ़ा देंगे।' मैंने हँसी में कहा। 'सच'।

'फिर तो मैं अखबार और खाली समय में थोड़ी रामायण अपने आप पढ़ लिया करूँगी।'

मैंने सोचा था कि दादी अम्मा यूं ही कह रही होंगी। मगर दूसरे ही दिन उन्होंने टोक दिया—

'क्यों पिंटू पढ़ाएगा नहीं ?'

बस मैंने उन्हें 'अ आ' और 'क ख' से शुरू किया तो अम्मा एक ही महीने में अखबार धीरे-धीरे शब्द मिलाकर पढ़ने लगीं। दादी अम्मा अपनी लगन व इच्छा से तेजी से पढ़ने लगी थीं।

समय गुजरता गया। दस साल पलक झपकते बीत गए। इस बीच मेरी शादी हुई। बच्चे हुए।

दादी अम्मा अस्सी साल की हैं। चुस्त। वे अब मेरे पाँच साल के बेटे को पढ़ाती हैं। शारीरिक मेहनत कम और मानसिक काम ज्यादा करती हैं।

'क्यों अम्मा अब तो तुम राजा को पढ़ाने लगी हो।' एक दिन मैंने हँस कर कहा तो अम्मा ने उत्तर दिया, 'जो किसी से लो वो ब्याज सहित लौटा दो।' अम्मा ने मेरी ओर देखकर कहा, 'विद्या को जितना दे दोगे उतनी बढ़ जाएगी। मैं कुछ लेकर नहीं बल्कि देकर और जिसका लिया उसे यहीं दुगुना लौटा कर मरना चाहती हूँ।'

दादी अम्मा की विद्या और उनकी बातें मेरे दिमाग में अकसर घूम जाती हैं। मैं दादी अम्मा को हमेशा अपने पास देखना चाहता हूँ। वे अभी भी चुस्त और खुश हैं।

वीर बालक अकबर

उस समय सिर्फ बारह या तेरह वर्ष के लगभग रही होगी, ज
थी। वह उस समय राज्य की परिस्थिति एवं राजनीतिक दाँव-
आगरा के अतिरिक्त उसके कब्जे में और कोई राज्य भी न

र हेमू मिलकर अकबर के विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहे थे
क्ति था- बहरम खाँ। बहरम खाँ हुमायूँ का एक सेनापति और
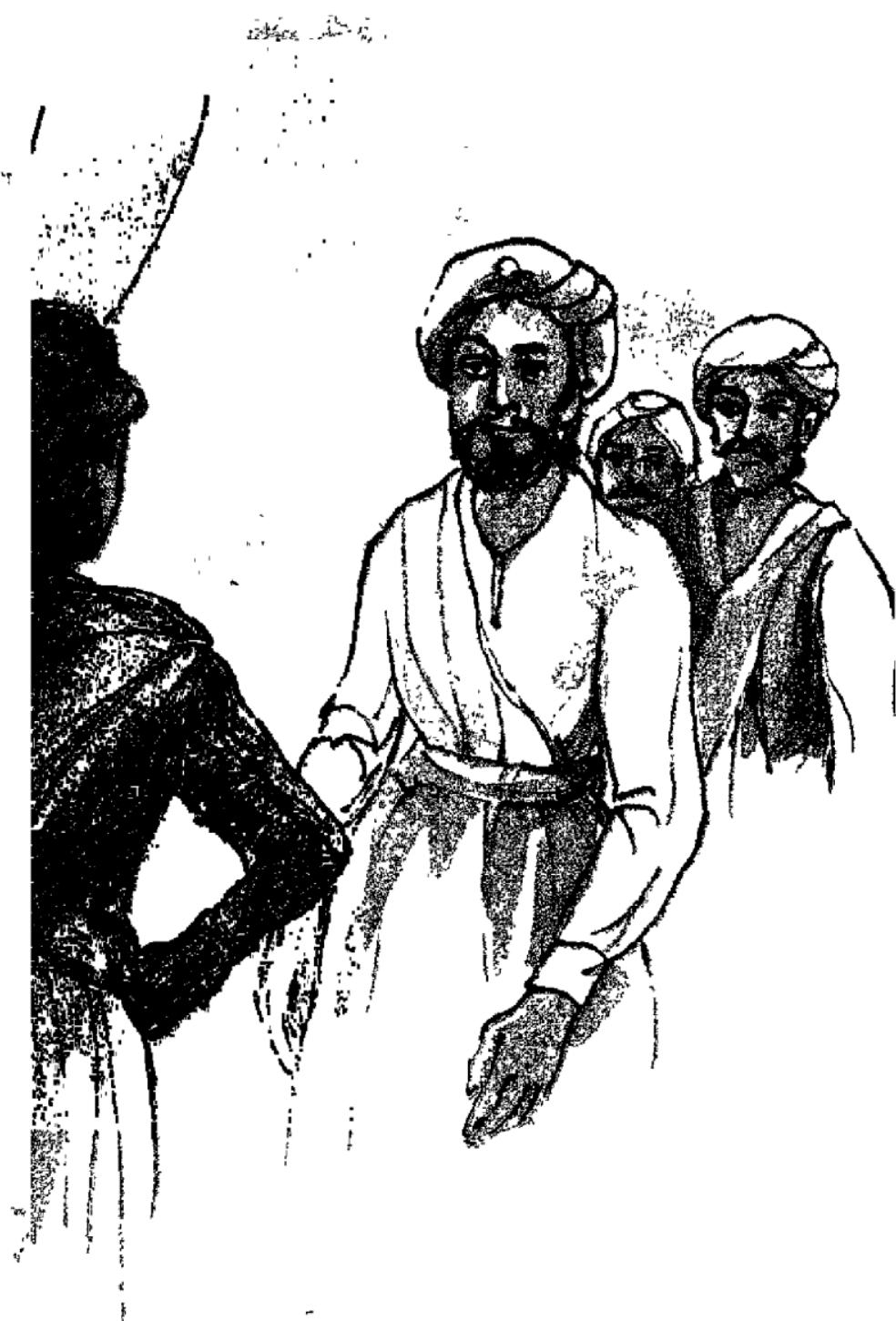
का एक तुर्क था मरते समय हूमायूँ ने अकबर को उसी के हाथो सौपा था बाद मे जब अकबर तेरह वर्ष का हुआ तो उसने बहरम खॉ को अपना प्रधानमन्त्री एव प्रमुख सरक्षक बनाया।

बहरम खाँ ने पानीपत के मैदान में सिकन्दर और हेमू की संयुक्त सेना को बुरी तरह पंरास्त किया। बहरम खाँ की बहादुरी के कारण अकबर की विजय हुई। सिकन्दर चुपचाप भाग निकला। लेकिन हेमू को बहरम खाँ ने बंदी बनाकर अकबर के सम्मुख पेश किया। बहरम खाँ ने बालक अकबर के हाथों में एक बड़ी सी तलवार देकर कहा- 'तलवार हाथों में है और शत्रु सामने खड़ा है इसको कत्ल करो।'

अकबर ने गौर से शुत्र हेमू को देखा। युद्ध भूमि में तीर घुसने के कारण हेमू की एक आँख में बड़ा सा घाव हो गया था और आँख से रक्त बह रहा था। शरीर पर जगह-जगह घाव थे।

अकबर ने तलवार लौटाते हुए बहरम खाँ को उत्तर दिया- 'मैं घायल और निहत्थे व्यक्ति पर हथियार नहीं चला सकता, भले ही वह मेरा दुश्मन क्यों न हो।' बहरम खाँ यह सुनकर अत्यन्त प्रभावित हुआ और अभिभूत होकर चला गया। बाद में इतिहासकारों ने अकबर की राजनीतिक दूरदर्शिता व सामाजिक नीतियों के कारण उसे अकबर महान् की संज्ञा दी।

नमक-रोटी का स्वाद

पति था। उसके तीन बेटे और एक बारह वर्ष की बेटी थी
थीं। किसान और उसकी पत्नी तीर्थयात्रा पर जाना चाहते
ने के पूर्व वे घर का पूरा दायित्व किसी एक बहू पर डालकर
वधू को घर की स्वामिनी बनाए, इसी सोच में बैठे थे। तभी

ताजी? किस सोच में हो अम्मा?' पुत्री ने माता-पिता को सो

त बताकर कहा, 'मुझे तो मेरी तीनों बहुएँ चतुर और सयान
विवेकशील कौन है इसका निर्णय नहीं ले पा रहा हूँ।'
!' बेटी ने कहा, 'आप तीनों भाभियों की परीक्षा लीजिए, जो ख
तीर्थयात्रा पर चले जाइए।'

'लेकिन बिटिया इसका निर्णय कैसे होगा कि कौन सी बहु चतुर है?'

'आप सभी से एक सवाल पूछिए, कि सबसे दूर क्या जाता है ?' पुत्री ने कहा कि जो इसका उत्तर देगा, वही घर की कर्ताधर्ता होगी।

किसान ने ऐसा ही किया और तीनों बहुओं को रातभर का समय प्रश्न का उत्तर हेतु दिया।

सुबह एक-एक करके तीनों बहुओं ने उत्तर दिए।

बड़ी बहु ने बताया, 'पिताजी, कुत्ते की आवाज बड़ी दूर तक जाती है। रात में एक कुत्ता बड़ी दूर भौंक रहा था, पर आवाज घर तक आ रही थी।'

'हाँ यह तो तुमने ठीक कहा', किसान ने उसकी बात और उत्तर का समर्थन किया। फिर मझली बहू से पूछा, 'और तुम्हारा क्या कहना है मझली ?'

'मुर्गे की आवाज दूर गाँव तक जाती है पिताजी', मझली ने बताया, 'सुबह उसकी बाँग दूर-दूर तक सोए लोगों को जगा देती है।'

'हाँ, तुम भी ठीक कहती हो।'

किसान ने फिर सबसे छोटी बहू से पूछा, 'तुम्हारा क्या विचार है, बहूरानी?'

छोटी बहू ने नम्रतापूर्वक कहा "पिताजी, मेरा मानना है कि घर पर पधारे अतिथि के लिए नमक-रोटी के साथ स्वागत में बोले गए दो शब्द बड़ी दूर तक जाते हैं।"

सुनकर किसान गद्‌गद् हो उठा। उसके पास बैठी हुई उसकी बेटी भी प्रसन्नता से बोल पड़ी, 'पिताजी, छोटी भाभी बिल्कुल ठीक कहती हैं, घर में आए मेहमान का स्वागत नमक-रोटी से भी किया जाए तो स्वागत सत्कार से प्राप्त नमक रोटी का स्वाद मेहमान अपने साथ दूर तक ले जाता है।'

समस्या सुलझ गई। किसान अपनी बुद्धिमान पुत्री की सहायता से गृहस्वामिनी का चुनाव कर छोटी बहू को घर की चाबियाँ थमाकर पत्नी के साथ तीर्थयात्रा पर निकल गया।

☆

सच की ताकत

गरीब थे। राजू पढ़ने में तेज था इसके बावजूद राजू ने पाँचवीं जमात
ीबी के कारण आगे न पढ़ सका। राजू की एक बहन थी। वह एक
स्कूल न जाकर गली के अन्य आवारा लड़कों के साथ घूमता रहता।
5 घर चला रहे थे। राजू गली के आवारा लड़कों की संगति में पड़कर
। बीड़ी पीना, जुआ खेलना, झगड़ा करना और न जाने क्या क्या।

अपने खर्चों की चिन्ता के कारण नींद नहीं आ रही थी। अभी तक राजू
ु चुराकर अपनी गन्दी आदतों को बढ़ावा देकर आवारा लड़कों में मजे
घर में ऐसी कोई वस्तु नहीं थी, जिसे वह बेच पाता। छोटी मोटी
चम्मच वह ले जाकर बेच चुका था। पर अब ? इसी चिन्ता में वह

तभी उसके कानो मे पिता की आवाज पडी जो वे उसकी माँ से कह रहे थे वह ध्यान देकर सुनने लगा राजू अपनी छोटी बहन के साथ अलग कमरे मे लेटा था दूसरे कमरे से स्पष्ट आवाज आ रही थी—

"राजू दिन पर दिन खराब आदतें सीख रहा है। वह आवारा लड़कों के साथ रहता है। घर की चीजें बेच आता है। हम एक-एक चीज जोड़ रहे हैं मेहनत करके कि कल को रानी बिटिया के काम आएँगी। लेकिन...।" इतना कहकर राजू के पिताजी चुप हो गए। राजू की माँ कुछ नहीं बोली थीं। "काश, वह हम लोगों की कुछ मदद भले न करे, लेकिन अच्छी तरह से घर में तो रहे। हमारी मजबूरी है कि हम उसे पढ़ा नहीं पाए।"- फिर उसके पिताजी का उदासी भरा स्वर अँधेरे में डूब गया।

राजू को यह सब सुनकर बड़ा बुरा लगा। उसे आत्मग्लानि हुई। उसने स्वयं को धिक्कारा। उसे रातभर अच्छा नहीं लगा। उसे लगा जैसे वह वास्तव में एक अपराधी और बुरा लड़का हो। सबेरे ही उठकर घर से बाहर निकल गया। किसी प्रकार उसने एक अखबार के दफ्तर में जाकर अखबार बेचने का काम ले लिया।

अखबार के मालिक दयालु थे। उन्होंने राजू को अपने लड़के की भाँति प्यार दिया। वह अखबार के दफ्तर की निगरानी भी करने लगा। वहाँ की चौकीदारी और सफाई करता तथा सभी लोगों को खुश रखने की पूरी चेष्टा करता।

एक महीने बाद जब राजू को अखबार के मालिक ने दो-सौ रुपये दिये तो वह खिल उठा। अपने पसीने की कमाई लेकर उसने अपने माता-पिता के चरणों में रख दी और कहा— "मुझे मेरे गलत कार्यों के लिए क्षमा कर दो। अब आज से मैं भी अपनी बहन के लिए धन जोड़ूँगा। उसकी शादी अच्छे घर में करूँगा"।

एक दिन राजू, अखबार बाँटकर एक गली में लगे नल पर पानी पी रहा था, वहाँ कुछ बदमाश जैसे लगने वाले लोगों की बातचीत सुनकर ठिठक गया। वह चुप होकर सुनने लगा— 'इस अखबार के मालिक के घर पर जाकर उसकी ढंग से धुनाई करनी है। इसने हमारी नकली दवाओं के बारे में छापा और छापता ही जा रहा है।' एक दाढ़ी वाला नौजवान गुण्डा अपने तीन साथियों को बता रहा था— "मैं तुम सब लोगों के खाने-पीने का खर्चा लेकर

आया हूँ कम्पनी के मालिक से

"रात बारह बजे धावा बोलेंगे.... उस समय वहाँ उसके दफ्तर के लोग भी नहीं होंगे।' दूसरे एक बदमाश साथी ने सुझाव दिया।

राजू ने यह खतरनाक योजना अपने अखबार के मालिक के बारे में सुनी तो वह तुरन्त रास्ते में पड़ने वाली पुलिस चौकी के दरोगा को पहचानता था। दरोगा प्रायः अखबार के दफ्तर मे आता रहता था। सारी बात सुनकर दरोगा बोला- "राजू जो तुम बता रहे हो क्या वह सब सच है?" "जी हाँ, मैंने अपने कानों से सुना है" वह बोला।

फिर राजू ने धीरे-से दरोगा के कान में कुछ कहा तो दरोगा जी उसकी योजना पर मुग्ध और आश्वस्त हुए। दरोगा जी को इन गुण्डों की वैसे भी तलाश थी, वह उन गुण्डों को पकड़कर, कम्पनी पर छापा डालने की सोच रहे थे। राजू ने गुण्डों का जो हुलिया दरोगा को बताया था, उससे दरोगा को अन्य अपराधों में भी उन गुण्डों का सम्बन्ध दिखाई पड़ रहा था। राजू की रिपोर्ट पाकर दरोगा अब काफी उत्साह से भर गये थे। उन्होंने राजू को शाबाशी देकर उसे भी मौके पर होशियार रहने की हिदायत दी।

राजू ने जब यही बात अपने मालिक को बताई और सावधान रहने को कहा तो पहले उन्हें हँसी आई लेकिन राजू की स्वामिभक्ति एवं उसकी ईमानदारी पर उन्हें पूर्ण विश्वास था, इसलिए वे गम्भीर हो गए।

"आप चिन्ता नहीं करें और अपने अन्दर के कमरे में सोये रहें।" राजू ने विनयपूर्वक कहा- "बाबू जी, आज मुझे रात भर यहीं रहने दीजिए। मैं उन्हें मौके पर पकड़ना चाहता हूँ। मैंने दरोगा जी से बात कर ली है।" वे आश्चर्य से राजू को देखने लगे और चौदह वर्षीय लड़के की स्वामिभक्ति तथा साहस पर अन्दर ही अन्दर मुग्ध हो उठे। वे फिर मान गए और सतर्क होकर अपने कमरे में चले गए।

आधी रात को बदमाशों ने दस्तक दी।

राजू ने दरवाजा खोला।

"कौन है तू ? अखबार का मालिक कहाँ है ?" एक ने उसे धकेलते हुए पूछा।

मैं हॉकर हूँ, अखबार बेचने वाला मालिक अन्दर कमरे मे सो रहे हैं उसने हाथ से इशारा कर दिया, जिसमें मालिक लेटे हुए थे।

वे सारे के सारे धड़धड़ाते हुए अन्दर उस कमरे की ओर लपक लिए। राजू ने तभी तेजी से बाहर आकर उल्लू की बोली बोल दी— "घुअक घू.....घुअक घू...।"

बोली सुनते ही दरोगा जी अपने दल-बल सहित आ धमके। वह राजू की योजनानुसार पास एक मकान के बरामदे में सोने का नाटक किए लैटे थे। दरोगा जी ने अन्दर घुसकर सारे गुण्डों को पकड़ जेल भेज दिया। उन्होंने राजू की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

दूसरे ही दिन राजू की चित्र सहित अखबार में साहस कथा प्रकाशित हुई। अखबार के मालिक ने उसका नाम पुरस्कार हेतु भेजा। इसके साथ ही उसकी पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था अपने स्वयं के खर्चे से कराई। जब राजू की बहन की शादी हुई तो अखबार के मालिक ने बहुत सहायता की।

अपने परिश्रम, ईमानदारी एवं साहस की पूँजी से राजू आगे चलकर बड़ा ही यशस्वी बना।